वार्षिक पत्रिका

अपराजिता

कला एवं संस्कृति विशेषांक

2016-2017

श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय

रुड़की (हरिद्वार) उत्तराखण्ड (स्थापित 1966)

NAAC Accredited - B

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः।

हमें सब दिशाओं से श्रेष्ठ विचार प्राप्त हों।

Let Noble Thoughts Come to Us from Every Side

ऋ.।89।।

कला एवं संस्कृति विशेषांक

अपराजिता

अंक 16 2016-17

संरक्षिका

डा० अर्चना मिश्रा, प्राचार्या

मुख्य – सम्पादिका

डा० अनुपमा गर्ग

सम्पादक मण्डल

डा० अलका आर्य

डा० अस्मा सिद्दीकी

आवरण एवं अंतः सज्जा

डा० अलका आर्य

छात्र – सम्पादिका

कु० गुलफ्शा, बी.ए., तृतीय वर्ष

कु० शैला, बी.एससी., द्वितीय वर्ष

कु० रुमाना, बी.ए., द्वितीय वर्ष

कु० आयुषि, बी.एससी., प्रथम वर्ष

NAAC Accredited - B

श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रुड़की

सम्बद्ध हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर (स्थापित 1966)

इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में प्रकट विचार लेखकों के अपने है। सम्पादक मण्डल की उनसे सहमति होना अनिवार्य नही है।

आवरण पृष्ठ पेंटिंग
कु० [illegible], कु० [illegible] शर्मा, कु० [illegible], कु० [illegible], कु० [illegible]
(एम.ए., चित्रकला)

कम्प्यूटर कार्य
श्री [illegible]

प्रकाशक
एस.एस.डी.पी.सी. गर्ल्स पी. जी. कॉलेज,
रुड़की - 247 667
दूरभाष : 01332-262[illegible]
ई-मेल : ssd.degree@gmail.com

मुद्रक :- श्री [illegible], [illegible], रुड़की मो० [illegible]

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद

NATIONAL ASSESSMENT AND ACCREDITATION COUNCIL

An Autonomous Institution of the University Grants Commission

Certificate of Accreditation

The Executive Committee of the
National Assessment and Accreditation Council
on the recommendation of the duly appointed
Peer Team is pleased to declare the
Sri Sanatan Dharam Prakash Chand Kanya Snatkottar Mahavidyalaya
Roorkee affiliated to Hemvati Nandan Bahuguna Garhwal University, Uttarakhand as
Accredited
with CGPA of 2.53 on four point scale
at B grade
valid up to January 18, 2021

Date : January 19, 2016

Director

उत्तराखण्ड सचिवालय,
देहरादून 248 001
फोन : 0135-2755177 (का.)
0135-2650433
फैक्स : 0135-2712827

पत्रांक : UV-296-मुख्यमंत्री
दिनांक : 24.4.17

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता है कि श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय रूड़की द्वारा वार्षिक पत्रिका "अपराजिता" का प्रकाशन 'कला एवं संस्कृति' विशेषांक के रूप में किया जा रहा है।

मुझे आशा है कि पत्रिका में प्रकाशित लेख पाठकों के लिए उपयोगी एवं ज्ञानवर्धक सिद्ध होंगे।

मेरी ओर से "अपराजिता" पत्रिका के प्रकाशन पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

(त्रिवेन्द्र सिंह रावत)

डॉ० अर्चना मिश्रा
प्राचार्या
श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय
रूड़की, हरिद्वार

HEMVATI NANDAN BAHUGUNA GARHWAL UNIVERSITY, SRINAGAR (GARHWAL)- 246174, UTTARAKHAND, INDIA
हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर (गढ़वाल)- 246174, उत्तराखण्ड, भारत
(A Central University)

Prof. J.L. Kaul
Vice-Chancellor
प्रो० जे०एल० कौल
कुलपति

Ph. No.: [illegible]
Fax No.: [illegible]

Ref. No.: VC/HNBGU/[illegible]
Dated: 7/2/2017

संदेश

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रुड़की, हरिद्वार, उत्तराखण्ड अपनी वार्षिक पत्रिका ''अपराजिता'' 2016-2017 का प्रकाशन 'कला एवं संस्कृति' विशेषांक के रूप में करने जा रहा है, इस हेतु समस्त प्रकाशन मण्डल को हार्दिक बधाई। पत्रिकाएं किसी भी शैक्षणिक संस्था के छात्र-छात्राओं की रचनात्मक क्षमता को सार्थक मंच प्रदान करती है। पत्रिका संस्थान के शैक्षणिक एवं शिक्षणेत्तर गतिविधियों का दर्पण होती है।

मुझे आशा है कि पत्रिका ''अपराजिता'' में भी छात्र-छात्राओं की मौलिक प्रतिभा, उनके दृष्टिकोण, भावनाओं और विचारों से युक्त रचनाओं आदि का समावेश होगा, जिससे छात्र-वर्ग के जीवन-दर्शन, कला-संस्कृति और अध्ययन-रुचि में अभिवृद्धि होगी। आशा है महिला ज्ञानवर्द्धक व अन्य पठनीय सामग्री का समावेश कर पत्रिका को विशेष बनाने का प्रयास करेंगे।

मैं पत्रिका ''अपराजिता'' के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित
(जे० एल० कौल)

डॉ० अर्चना मिश्रा
प्राचार्या
श्री सनातन धर्म प्रकाश चंद कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय
रुड़की हरिद्वार - 247667 (उत्तराखण्ड)

डॉ० महावीर अग्रवाल
डी.लिट., संस्कृत
पूर्व कुलपति

उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय
[illegible], हरिद्वार - 249 402
फोन कार्या.: 01334-[illegible]
फोन आवा.: 01334-[illegible]
ई-मेल: [illegible]
वेबसाइट: [illegible]

दिनांक : 11.02.2017

शुभकामना संदेश

यह जानकर अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रुड़की, इस वर्ष वार्षिक पत्रिका का 'कला एवं संस्कृति' विशेषांक प्रकाशित करने जा रहा है।

यह कन्या महाविद्यालय हरिद्वार, जनपद का श्रेष्ठतम शिक्षा-संस्थान है। इसकी अपनी स्वस्थ, समृद्ध और गौरवशाली परम्परा है। निकटवर्ती ग्रामीण अंचल से विद्यामधु का पान कर सर्वांगीण विकास वाली बालिकाओं के निर्माण का यह अनुपम केन्द्र है।

विविध कलाओं का विकास और संस्कृति की सुरभि से सम्पूर्ण वातावरण को सुरभित करना शिक्षा का पावन उद्देश्य है। यह महाविद्यालय इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये सतत प्रयत्नशील है। पत्रिका प्रकाशन इस दिशा में एक अभिनन्दनीय प्रयास है।

पत्रिका प्रकाशन की इस मंगल बेला पर मैं महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. अर्चना मिश्रा जी को, प्राध्यापिका बहिनों को और महाविद्यालय के कुल प्रबन्धक को रोम-रोम से बधाई एवं शुभकामनाएं अर्पित करता हूँ।

मंगलाभिलाषी
डॉ० महावीर अग्रवाल

स्थापित : 1966

फोन : 01332-[illegible]
फैक्स : 01332-[illegible]

श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय

रुड़की – 247 667 (हरिद्वार) उत्तराखण्ड
(सम्बद्ध हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर)

शुभकामना संदेश

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि महाविद्यालय पत्रिका ''अपराजिता'' के नवीन अंक का प्रकाशन 'कला एवं संस्कृति' विशेषांक के रूप में हो रहा है। आज सर्वत्र पश्चिमी सभ्यता के अंधानुकरण के कारण बढ़ते सांस्कृतिक प्रदूषण के समय में इस विशेषांक का प्रकाशन निश्चय ही सराहनीय है। यह नई पीढ़ी को संस्कृति में समाहित आदर्शों व अनुकरणीय जीवन मूल्यों से जोड़ने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

आशा है पत्रिका गत वर्षों की भाँति उत्कृष्टता के मापदंडों पर खरी उतरेगी। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु प्राचार्या तथा संपादिका मंडल को अग्रिम शुभकामनायें।

दिनांक 3-4-17

अजय
अध्यक्ष, प्रबन्ध समिति

स्थापित : 1966

फोन : 01332-262705
फैक्स : 01332-269434

श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय
रुड़की – 247 667 (हरिद्वार) उत्तराखण्ड
(सम्बद्ध हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर)

संदेश

श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या महाविद्यालय, अपनी वार्षिक पत्रिका ''अपराजिता'' का प्रकाशन 'कला एवं संस्कृति' विशेषांक के रूप में कर रहा है। गत वर्षों में पत्रिका ने छात्राओं की अभिव्यक्ति का एक सशक्त मंच प्रदान करने के साथ ही क्षेत्र के शैक्षणिक परिदृश्य में भी एक गौरवपूर्ण स्थान अर्जित किया है। आशा है गुणवत्ता को उच्चतर बनाये रखने के साथ ही महाविद्यालय पत्रिका छात्राओं को कला और संस्कृति के सुन्दर व शाश्वत मूल्यों से भी परिचित कराने का उद्देश्य पूर्ण करेगी। पत्रिका के माध्यम से प्राचार्या, संपादिका मण्डल तथा समस्त महाविद्यालय परिवार को इस सार्थक प्रयास हेतु हार्दिक शुभकामनायें प्रेषित करता हूँ।

दिनांक : 27-3-17

दिनेश गुप्ता
उपाध्यक्ष, प्रबन्ध समिति

स्थापित : 1966

फोन : 01332-2627..

फैक्स : 01332-2644..

श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय

रुड़की – 247 667 (हरिद्वार) उत्तराखण्ड

(सम्बद्ध हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर)

संदेश

महाविद्यालय पत्रिका 'अपराजिता' का 'कला एवं संस्कृति' विशेषांक के रूप में प्रकाशन एक प्रशंसनीय प्रयास है। आशा है इसके माध्यम से छात्राओं व पाठकों को शिक्षाप्रद, ज्ञानवर्धक और रोचक रचनाएं उपलब्ध होंगी। 'अपराजिता' ने गतवर्षों में शिक्षा, नारी सशक्तिकरण, उत्तराखण्ड एवं 'विश्वशांति' आदि विशेषांकों के माध्यम से अनेक मील के पत्थर स्थापित किए हैं। प्रस्तुत अंक भी उत्कृष्टता के सभी मापदंडों पर खरा उतर कर प्रचुर प्रशंसा प्राप्त करेगा, ऐसी अपेक्षा है।

प्राचार्या व संपादिका मंडल को उनके उत्तम प्रयास के लिए अनेकों शुभकामनायें।

अंकित सिंहल

सचिव, प्रबंध समिति

स्थापित : 1966

फोन : 01332-262706

फैक्स : 01332-264434

श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय

रुड़की – 247 667 (हरिद्वार) उत्तराखण्ड

(सम्बद्ध हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर)

संदेश

'कला एवं संस्कृति' विशेषांक के कलेवर में 'अपराजिता' का प्रकाशन अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है। आशा है पत्रिका में प्रस्तुत लेख, निबंध व अन्य सामग्री छात्राओं तथा प्रबुद्ध पाठकगणों के लिए समान रूप से ज्ञानवर्धक तथा रुचिकर होंगे।

पूर्णतया समर्पित भाव से शिक्षा तथा उत्तम सांस्कृतिक मूल्यों के प्रसार के लिए निरंतर कार्यरत प्राचार्या एवं प्राध्यापिका वर्ग तथा पत्रिका के निरंतर एवं गुणवत्तापूर्ण संपादन के लिए संपादिका मंडल को हार्दिक शुभकामनायें।

दिनांक : 25.3.17

सुनील कुमार गोयल

उपसचिव, प्रबंध समिति

स्थापित : 1966

फोन : 01332-[illegible]
फैक्स : 01332-[illegible]

श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय

रुड़की – 247 667 (हरिद्वार) उत्तराखण्ड
(सम्बद्ध हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर)

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय रुड़की अपनी वार्षिक पत्रिका ''अपराजिता'' का प्रकाशन वर्ष 2016–17 में करने जा रहा है।

मेरे लिए यह परम सौभाग्य की बात है कि मैं महाविद्यालय के परिवार से जुड़ा हूँ, जो [illegible] अनुभूति भी प्रदान करता है। यह अनुभव मेरे जीवन में सदैव एक नई ऊर्जा प्रदान करता है आज हम सबके लिए बड़े प्रसन्नता की बात है कि हमारे महाविद्यालय को 51 वर्ष पूरे हो गये हैं इन 51 वर्षों में महाविद्यालय ने उतार चढ़ाव देखे हैं हमारी पूर्व की प्रबन्धक समितियों एवं पूर्व प्राचार्याओं ने अपने अथक प्रयासों से इस महाविद्यालय को सफलताओं के शीर्ष पर पहुँचाया है।

इस वर्ष महाविद्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका अपराजिता **कला एवं संस्कृति विशेषांक** है। कला व संस्कृति प्रत्येक छात्रा के जीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है कला व्यक्ति की आन्तरिक भावनाओं को दर्शाती है वहीं संस्कृति हमारे देश की विचारधाराओं को दर्शाती है। छात्राओं को कला एवं संस्कृति का ज्ञान आवश्यक है ताकि वे जीवन में सदैव आगे बढ़ सकें।

महाविद्यालय की छात्राओं की उपलब्धियां, महाविद्यालय परिवार के लिये एक सुखद अनुभव है। इस पूर्व एवं वर्तमान निर्माताओं द्वारा इसी तरह उदाहरण प्रस्तुत किया गया है। इस अविस्मरणीय योगदान के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि रुड़की नगर के प्रबुद्ध नागरिकों के आशीर्वाद से [illegible] करते हुये भविष्य में महाविद्यालय नये कीर्तिमान स्थापित करेगा।

महाविद्यालय की पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिये मैं अपनी हार्दिक शुभकामनायें प्रकाशन सम्पादक मण्डल को प्रेषित करता हूँ।

दिनांक : 19.2.17

सौरभ भूषण श[illegible]
कोषाध्यक्ष, प्रबंध समिति

प्राचार्या संदेश

मनुष्य को सुसंस्कृत बनाने का विधान है संस्कृति। प्रत्येक समाज सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक गतिविधियों के [illegible] उसकी संस्कृति की रचना होती है। इसकी व्यापक परिधि में धर्म, दार्शनिक चिन्तन, साहित्य-संगीत, विविध कलाएं आदि सभी कुछ आ [illegible] है। संस्कृति में निहित उदात्त और आध्यात्मिक यथार्थ ही अपने कल्पनात्मक रूपों में विविध कलाओं के माध्यम से निरूपित होकर मानव समाज को उपलब्ध होता है। [illegible] की भाषा और अभिव्यक्ति देश काल की सीमाओं से परे है, अतः उसके उत्कृष्टतम [illegible] कला का समन्वय ही किसी संस्कृति को सनातन और सार्वभौम बनाता है। कला और संस्कृति के इस अन्तःसंबंधित संबंध को पहचान कर 'अपराजिता' का 'कला एवं संस्कृति' विशेषांक रूप में प्रकाशन निश्चय ही सराहनीय है।

आज का युग घोर प्रतिस्पर्द्धा और संचारक्रांति का युग है। युवाओं के विकास के इस समय में युवा पीढ़ी को बौद्धिक और मानसिक रूप से सबल बनाने वाली संस्कार युक्त शिक्षा एक अनिवार्यता है। ऐसी शिक्षा ही उन्हें सही और गलत के बीच चुनाव करने का 'नीर-क्षीर विवेक' प्रदान कर आभासी दुनिया के अंधकार में भटकने से बचायेगी और उन्हें एक सुयोग्य नागरिक के रूप में राष्ट्रनिर्माण में रचनात्मक योगदान के लिए तैयार करेगी। महाविद्यालय का विशिष्ट शैक्षणिक सांस्कृतिक परिवेश इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए सर्वथा अनुकूल है और इसके लिए [illegible] प्रबन्धतंत्र प्राध्यापिकाएं एवं विद्यार्थी भी बधाई का पात्र है।

अपराजिता गत दो दशकों से निरन्तर बालिकाओं की रचनाधर्मिता और मौलिक सृजन को मंच प्रदान करने का कार्य कर रही है। इसी क्रम में इसने 'शिक्षा विशेषांक', 'उत्तराखण्ड विशेषांक', '[illegible] विशेषांक', और गत वर्ष प्रकाशित 'स्वर्णजयन्ती विशेषांक' के रूप में अनेक मील के पत्थर स्थापित किये हैं। आशा है वर्तमान अंक भी पुनः रचनाधर्मिता और मौलिकता के नव प्रतिमान स्थापित करने के साथ-साथ नवीन पीढ़ी को संस्कृति एवं कला के सत्य सुन्दर और कल्याणकारी स्वरूप से परिचित करवाकर उन्हें दिशा-बोध प्रदान करने के बहुआयामी उद्देश्य की पूर्ति में सफल होगा।

इस सार्थक प्रयास हेतु संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

अर्चना मिश्रा

अपनी बात

[illegible]

[illegible] *Eat Drink and Be Merry* [illegible]

[illegible]

[illegible] 'अपराजिता' [illegible] 'कला एवं संस्कृति विशेषांक' [illegible]

[illegible]

धन्यवाद।

डा० अनुपमा [illegible]

अनुक्रम

पृष्ठ संख्या

1. [illegible] — 2
2. [illegible] — 21
3. [illegible] — 26
4. [illegible] — 28
5. [illegible] — 30
6. [illegible] — 31
7. [illegible] — 32
8. [illegible] — 33
9. [illegible] — 35
10. [illegible] — 36
11. [illegible] — 38
12. [illegible] — 39
13. [illegible] — 40
14. [illegible] — 41
15. [illegible] — 42
16. [illegible] — 43
17. [illegible] — 45
18. [illegible] — 46
19. [illegible] — 47
20. [illegible] — 49
21. [illegible] — 51
22. [illegible] — 52
23. [illegible] — 53
24. [illegible] — 54
25. [illegible] — 55
26. [illegible] — 56
27. [illegible] — 58
28. [illegible] — 60
29. [illegible] — 61
30. [illegible] — 62
31. [illegible] — 64
32. Role of Women in Art and Culture - Km. Shruti Mishra, Km. Manisha 65
33. Relation of Science with Art & Culture - Km. Mudrika Verma 66
34. Transparency in National Policy / A Journey Now - Km. Arshya Gauri/Km. Anika Upadhyay 67
35. Human Values & Education - Dr. Kamna Jain 68
36. Folk Dance of India - Dr. Anupama Garg 69
37. Influence of Cultural Ethos on Development - Km. Ananya 70
38. [illegible] — 71
39. [illegible] — 74

'सा प्रथमा संस्कृति विश्ववारा'

यह विश्व का प्रथम करने वाली सर्वोत्तम,
श्रेष्ठ संस्कृति भारतीय संस्कृति है जो अपने गुणों में अनुपम है।

महाविद्यालय की गौरवपूर्ण उपलब्धियाँ

विश्वविद्यालय मेरिटलिस्ट में स्थान प्राप्त करने वाली छात्राएँ

क्र० सं०	नाम	कक्षा	वर्ष	अंक प्रतिशत	विश्वविद्यालय मेरिट लिस्ट में स्थान
1.	कु० छाया त्यागी	बी०ए०	2016	78.00	प्रथम (स्वर्ण पदक)
2.	कु० रीतू रानी	बी०ए०	2016	76.00	तृतीय
3.	कु० अर्चना	एम०ए० चित्रकला	2016	85.97	प्रथम (स्वर्ण पदक)
4.	कु० आंचल कुमारी	एम०ए० चित्रकला	2016	84.50	तृतीय
5.	कु० शिल्पा राय	बी०एस०सी०	2016	81.33	पंचम
6.	कु० मीनाक्षी त्यागी	एम०ए० राज०विज्ञान	2014	73.00	चतुर्थ
7.	कु० परवीन	एम०ए० राज०विज्ञान	2013	73.67	द्वितीय
8.	कु० मीनाक्षी	एम०ए० चित्रकला	2013	86.06	द्वितीय
9.	कु० दिव्या	एम०ए० चित्रकला	2013	85.71	तृतीय
10.	कु० शिवानी	एम०ए० चित्रकला	2013	85.13	चतुर्थ
11.	कु० प्रिया प्रधान	एम०ए० चित्रकला	2012	80.80	द्वितीय
12.	कु० अन्जुम आरा	एम०ए० चित्रकला	2012	79.30	चतुर्थ
13.	कु० ललिता देवी	एम०ए० चित्रकला	2012	79.10	पंचम
14.	कु० निशा राठी	एम०ए० राज०विज्ञान	2011	68.78	प्रथम (स्वर्ण पदक)
15.	कु० प्रीति रानी	एम०ए० चित्रकला	2011	77.60	द्वितीय
16.	कु० शिवानी सैनी	एम०ए० चित्रकला	2010	83.60	प्रथम (स्वर्ण पदक)
17.	कु० मीनाक्षी सिन्धु	एम०ए० चित्रकला	2010	80.10	द्वितीय
18.	कु० उपासना	एम०ए० चित्रकला	2010	77.30	चतुर्थ
19.	कु० प्रीति शर्मा	बी०एससी०	2009	79.76	प्रथम (स्वर्ण पदक)
20.	कु० नीनू त्यागी	एम०ए० चित्रकला	2009	79.10	द्वितीय
21.	कु० शिखा सैनी	एम०ए० चित्रकला	2009	77.50	पंचम
22.	कु० शगुन सिंह	एम०ए० चित्रकला	2008	83.63	प्रथम (स्वर्ण पदक)
23.	कु० नीतू	एम०ए० चित्रकला	2008	81.63	तृतीय
24.	कु० मोनिका पंवार	बी०एससी०	2007	79.89	द्वितीय

महाविद्यालय की प्रगति आख्या (2016-2017)

श्री [illegible] महाविद्यालय, [illegible] नगर के अग्रणी शैक्षणिक संस्थान के रूप में [illegible] की शैक्षणिक [illegible] हेतु उच्च शिक्षा के क्षेत्र में निरन्तर नवीन मील के पत्थर स्थापित करता रहा है। [illegible] अनुशासन, मानसिक विकास, आधुनिक वैज्ञानिक युग के साथ [illegible] विकास में योगदान देते हुए महाविद्यालय के कला एवं विज्ञान संकाय उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। [illegible] संकाय (स्नातक एवं स्नातकोत्तर) तथा विज्ञान संकाय में लगभग 1400 छात्राएँ शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। [illegible] द्वारा संचालित पाठ्यक्रमों के साथ [illegible] के द्वारा भी सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास के लिए [illegible] प्रयासरत है।

कला संकाय में 1946 से स्नातक स्तर पर सात विषय हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत साहित्य, [illegible] [illegible], अर्थशास्त्र व [illegible] तथा 2006 से स्नातकोत्तर स्तर (स्ववित्तपोषित) पर [illegible] विषय [illegible] किया है। विज्ञान संकाय (स्ववित्त पोषित) में 1948 से रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान, गणित, [illegible] कम्प्यूटर विज्ञान तथा 2002 में [illegible] तथा 2012 में [illegible] विषयों में स्नातक [illegible] है।

सत्र 2015-2016 में भी महाविद्यालय का परीक्षा परिणाम उच्च कोटि का रहा है।

[illegible]	96.93%	बी०एससी०, प्रथम वर्ष	97.20%
बी०ए०, प्रथम वर्ष	93.22%	बी०एससी०, द्वितीय वर्ष	98.71%
बी०ए०, द्वितीय वर्ष	92.24%	बी०एससी०, तृतीय वर्ष (41 प्रथम श्रेणी)	98.20%
बी०ए०, तृतीय वर्ष (31 प्रथम श्रेणी)			
एम०ए०, चित्रकला प्रथम वर्ष	100%	एम०ए०, राजनीति विज्ञान प्रथम वर्ष	100%
एम०ए०, चित्रकला द्वितीय वर्ष (अंक सुधार परीक्षाफल प्रतीक्षित)	59.25%	एम०ए०, राजनीति विज्ञान द्वितीय वर्ष (अंक सुधार परीक्षाफल प्रतीक्षित)	60.66%

छात्र संघ चुनाव/विद्या परिषद गठन (2016-2017)

दिनांक 30/08/2016 को महाविद्यालय में निर्धारित प्रक्रियानुसार निर्वाचन अधिकारी डा० [illegible], [illegible], डा० [illegible] चौहान, सुश्री अंजलि प्रकाश, डा० अल्पना [illegible], श्रीमती [illegible], डा० [illegible] के [illegible] के साथ संघ चुनाव प्रक्रिया सम्पन्न हुई।

[illegible] में कु० [illegible], बी.ए. तृतीय वर्ष, अध्यक्ष, कु० [illegible], बी.एससी. तृतीय वर्ष, उपाध्यक्ष, कु० [illegible], बी.ए. तृतीय वर्ष, सचिव, कु० [illegible] वर्मा, बी.एससी. तृतीय सेमेस्टर, सहसचिव, कु० [illegible] के पद पर नियुक्त की गईं। कार्यकारिणी सदस्यों में कु० [illegible], कु० [illegible], कु० [illegible], कु० अंजलि चौहान चयनित हुए।

दिनांक 31/08/2016 को [illegible] समारोह में महाविद्यालय प्रबन्ध समिति पदाधिकारियों की [illegible] की अध्यक्षता में प्राचार्या डा० [illegible] द्वारा सभी पदाधिकारियों को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई गई।

[illegible] गतिविधियाँ-

[illegible] 70 साल 'याद करो कुर्बानी' पखवाड़ा

[illegible] - डा० [illegible] मिश्रा, समन्वयक - डा० अनुपमा [illegible]

[illegible] 70 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में मानव संसाधन विकास मंत्रालय के आह्वान पर महाविद्यालय में 'याद करो कुर्बानी' पखवाड़े का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रमों में छात्राओं ने बहुत [illegible] भाग लिया। विवरण निम्नवत् है-

[illegible].2016	देशभक्ति गीत गायन, संयोजिका-डा० [illegible], श्रीमती [illegible]	कु० कोमल, कु० आकांक्षा, कु० [illegible], कु० [illegible] आदि छात्राओं द्वारा प्रस्तुति
[illegible].2016	स्वलीगत लेखन प्रतियोगिता (देशभक्ति आधारित) संयोजिका-डा० [illegible]	प्रथम: कु० [illegible], द्वितीय: कु० [illegible], तृतीय: [illegible] एवं कु० [illegible]
[illegible].2016	निबन्ध लेखन प्रतियोगिता विषय-स्वतन्त्रता के 70 वर्ष, संयोजिका-डा० अनुपमा [illegible], डा० [illegible]	प्रथम: कु० [illegible], द्वितीय: कु० [illegible], तृतीय: कु० [illegible]
[illegible].2016	लाइब्रेरी सेवाओं का आरम्भ 'अपने आजादी के शहीदों को जाने', संयोजिका-डा० अनुपमा [illegible], डा० [illegible]	छात्राओं ने शहीदों के जीवन पर आधारित पुस्तकों का अध्ययन किया
[illegible].2016	पोस्टर प्रतियोगिता 'आजादी के रंग', संयोजिका - डा० [illegible]	प्रथम: कु० [illegible] द्वितीय: [illegible] एवं [illegible], तृतीय: कु० [illegible] एवं [illegible]
[illegible].2016	आजादी के [illegible] विचार प्रस्तुति, विषय - 'आजादी के मायने' Independence March, संयोजिका - डा० अनुपमा [illegible], डा० [illegible]	कु० [illegible], कु० [illegible], कु० [illegible], कु० [illegible], कु० [illegible] द्वारा विचार प्रस्तुति 'ये [illegible] प्यारा है आजादी का आजादी का, देखो परचम लहराता है आजादी का आजादी का'। [illegible] के साथ छात्राओं द्वारा प्रभात फेरी।
[illegible].2016	स्वतन्त्र सेनानियों का व्यक्ति चित्रण, संयोजिका - डा० [illegible]	कु० [illegible], कु० [illegible] छात्राओं आदि छात्राओं की सराहनीय प्रस्तुति।
[illegible].2016	'याद करो कुर्बानी'-[illegible] स्वतन्त्रता संग्राम एवं शहीद स्मारकों पर [illegible], संयोजिका - डा० [illegible], सुश्री अंजलि प्रकाश	कु० सोफिया, कु० [illegible], कु० [illegible], कु० कोमल (विजेता)
[illegible].2016	श्री [illegible] सिंह, सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, द्वारा विधिक जानकारी, संयोजिका - डा० [illegible], डा० [illegible]	छात्राओं को मौलिक अधिकारों, [illegible] अधिकारों व अन्य महत्वपूर्ण कानूनों की जानकारी प्रदान की।

20.08.2016	'अमरत्व वीरत्वं बलिदानम्' स्वतंत्रता संग्राम के क्रान्तिवीरों को संगीतमय स्मरण। संयोजिका - डा॰ [illegible]	कु॰ [illegible] स्वामी, कु॰ [illegible] कु॰ [illegible] द्वारा [illegible] प्रस्तुति।
22.08.2016	अखंड भारत हेतु हस्ताक्षर अभियान संयोजिका - डा॰ कामना जैन, सुश्री [illegible], डा॰ [illegible]	अनेक बोली, अनेक भेष, फिर भी भारत देश (छात्राओं द्वारा हस्ताक्षर किये गये)।
23.08.2016	नृत्य नाटिका 'आजादी के मायने' संयोजिका - डा॰ [illegible] शर्मा	कु॰ [illegible], कु॰ [illegible] कु॰ [illegible] आदि छात्राओं द्वारा प्रस्तुति।

वाद विवाद प्रतियोगिताएं

दिनांक 17.10.2016 को सामाजिक विज्ञान परिषद द्वारा "**विश्व शान्ति के निर्माण में संयुक्त राष्ट्र संघ** [illegible] अथवा बाधक' विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसका परिणाम निम्नवत रहा-

कु॰ [illegible] उपाध्याय	बी॰ए॰, तृतीय वर्ष	प्रथम
कु॰ [illegible] वर्मा	बी॰एससी॰, चतुर्थ सेमेस्टर	द्वितीय
कु॰ [illegible]	बी॰एससी॰, तृतीय वर्ष	तृतीय

[illegible] आयल कार्पोरेशन आफ इण्डिया लिमिटेड, रुड़की द्वारा संचालित 'सतर्कता जागरूकता सप्ताह' के अन्तर्गत दिनांक 4.11.2016 को "**राष्ट्रीय नीति में पारदर्शिता से भ्रष्टाचार उन्मूलन कर सकते हैं**" विषय पर महाविद्यालय स्तरीय वाद-विवाद प्रतियोगिता डा॰ कामना जैन व सुश्री प्रवीन के दिशा निर्देशन में आयोजित की गई। प्रतियोगिता में कु॰ [illegible] बी॰एससी॰ - चतुर्थ सेमेस्टर, प्रथम, कु॰ अंकिता उपाध्याय बी॰ए॰ [illegible] वर्ष, द्वितीय, कु॰ [illegible] वर्मा बी॰एससी॰ - चतुर्थ सेमेस्टर, तृतीय स्थान पर रहीं।

अन्तर्महाविद्यालयी वाद विवाद प्रतियोगिता

दिनांक 15.11.2016 को सामाजिक विज्ञान परिषद की ओर से '**गांधी दर्शन की वर्तमान में प्रासंगिकता**' विषय पर आयोजित वाद-विवाद प्रतियोगिता रुड़की शहर के विभिन्न महाविद्यालयों बी.एस.एम.पी.जी. [illegible] आई.एम.एस., [illegible] डिग्री कालेज, [illegible] लाल डिग्री कालेज तथा व्यापार मंडल कन्या महाविद्यालय इत्यादि की छात्राओं ने प्रतिभागिता की। परिणाम निम्नवत रहा -

कु॰ अंकिता उपाध्याय	बी॰ए॰, तृतीय वर्ष	एस.डी.पी.सी. (पी.जी.) कालेज, रुड़की
कु॰ [illegible]	बी॰ कॉम॰, द्वितीय वर्ष	[illegible] गर्ल्स डिग्री कालेज, रुड़की
कु॰ [illegible]	एम॰बी॰ए॰, द्वितीय वर्ष	आई.एम.एस., रुड़की

विभागीय प्रतियोगिताएं

विभिन्न विभागों द्वारा निम्न विषयों पर **निबन्ध प्रतियोगिताएं** आयोजित की गई- **आतंकवाद: एक** [illegible] चुनौती (राजनीति शास्त्र विभाग), **भारतीय संस्कृति और सामाजिक मूल्य** (समाजशास्त्र विभाग), [illegible] साहित्य में भारतीय संस्कृति और धर्म का अंत: सम्बंध (चित्रकला विभाग), **आर्थिक विकास** [illegible] संस्कृति (अर्थशास्त्र), उदार चरितानाम् तु वसुधैव कुटुम्बकम् (संस्कृत विभाग), **Role of women** [illegible] **and culture** (अंग्रेजी विभाग)

[illegible] **गतिविधि के अन्तर्गत** -

- **राजनीति विज्ञान विभाग** द्वारा डा॰ कामना जैन के निर्देशन में "गांधी जी का [illegible] प्रभाव" विषय पर एक लघु **नाटिका** का मंचन किया गया।
- छात्राओं को योग के प्रति उन्मेषित करने के उद्देश्य से विभिन्न **यौगिक क्रियाओं और आसनों का अभ्यास कराया गया।**
- [illegible] शास्त्र विभाग द्वारा दिनांक 20.02.2017 को विभिन्न [illegible] विषयों जैसे [illegible] [illegible], राजनीति [illegible] की कूटनीति इत्यादि पर **विचार प्रस्तुति की गई।**
- दिनांक 22.02.2017 को आयोजित **वाद-विवाद प्रतियोगिता** में नोटबंदी विषय के पक्ष एवं विपक्ष में छात्राओं ने अपने-अपने विचार रखे।
- दिनांक 08.05.2017 को छात्राओं ने अपने अपने लघु शोध प्रबन्ध के विषयों पर विचार प्रस्तुत किये।
- [illegible] एम॰ए॰ की **छात्राओं** के लिये **U-SET** प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी हेतु [illegible] और [illegible] का संचालन हुआ।
- [illegible] डा॰ [illegible] सिंह के दिशा निर्देशन में डिजिटल इण्डिया का भविष्य, छोटे राज्यों की मांग [illegible] तथा भारत में नोटबंदी एक विश्लेषणात्मक अध्ययन इत्यादि पर लघु शोध प्रबन्ध कराये गये।
- समाजशास्त्र विभाग द्वारा '**Relevance of Sociological theories in present context**' विषय पर विचार प्रस्तुति का आयोजन हुआ।
- हिन्दी विभाग द्वारा दिनांक 15.09.2016 को हिन्दी दिवस के अवसर पर **काव्य पाठ**, **श्लोगन प्रतियोगिता एवं हिन्दी सम्भाषण प्रतियोगिता** आयोजित की गई एवं सप्ताह के प्रत्येक शनिवार को छात्राओं के शैक्षणिक, बौद्धिक एवं भाषात्मक [illegible] के ज्ञान हेतु विविध समाचार पत्रों तथा पत्रिकाओं का पठन-पाठन कराया गया।
- **अर्थशास्त्र विभाग** द्वारा '**Demonetisation : Pros and Cons एवं GST : New Era of Tax reforms**' विषयों पर छात्राओं द्वारा विचार प्रस्तुति की गई।
- **चित्रकला विभाग** दिनांक 12.9.2016 को **चित्रकला परिषद** का गठन किया गया जिसके अन्तर्गत निम्न गतिविधियाँ आयोजित हुई -
- दिनांक 24.10.2016 को दीपावली के शुभ अवसर पर **वन्दनवार**, **कॉल ड्रैगिंग तथा रंगोली कट-आउट** प्रतियोगिता का आयोजन हुआ।
- दिनांक 04.02.2017 को '**विश्व की कला और संस्कृति विषय पर आयोजित पेंटिंग प्रतियोगिता** में बी. ए. एवं एम.ए. की छात्राओं ने भारतीय कला के साथ-साथ मिस्र, [illegible], यूनान, चीन तथा अन्य संस्कृतियों देशों की कलाकृतियों को अपने कैनवासों पर जीवन्त बनाया।
- **दिनांक 27.02.2017** को एम.ए. चित्रकला की छात्राओं के लिये मिट्टी की मूर्तियाँ सृजित करने की प्रतियोगिता कराई गई। जिसमें छात्राओं ने अपनी विशिष्ट कला प्रतिभा का परिचय देते हुए अनेक मनमोहक मूर्तियाँ बनाई।
- **शैक्षणिक भ्रमण**- दिनांक 04.05.4017 को विभागीय प्राध्यापिकाओं डा॰ [illegible] मिश्रा, श्रीमती [illegible] [illegible], सुश्री [illegible] एवं सुश्री [illegible] देवी के दिशा-निर्देशन में एम॰ए॰ चित्रकला की छात्राओं को शैक्षिक भ्रमण हेतु हरिद्वार ले जाया गया। इस भ्रमण के दौरान छात्राओं ने 'आनन्द आर्ट [illegible]' आर्ट गैलरी हरिद्वार के

चित्रकला एवं स्कूल देहरादून द्वारा प्रदर्शित कला कृतियों का अवलोकन किया। इसके अतिरिक्त [illegible] के दर्शनीय स्थलों यथा बौद्धधाम, पतंजलि योग पीठ तथा भारत माता मंदिर इत्यादि का भ्रमण करना [illegible] व्यक्तित्व भी रही।

- चित्र एवं हस्तकला प्रदर्शनी **'अभिव्यक्ति'** महाविद्यालय के स्वर्ण जयंती महोत्सव के अवसर पर [illegible] 02.2017 से 28.03.2017 तक चली **विश्व की कला और संस्कृति** विषय पर आधारित प्रदर्शनी [illegible] अनेक कला संस्कृतियों जैसे **ग्रीक, बाइजेन्टाइन, इजिप्शियन इटैलियन युरोपियन** और **भूटानी** [illegible] दर्शकों के आकर्षण का प्रमुख केन्द्र रही। इसके अतिरिक्त मिट्टी की प्रतिमाएं, पेपर मेशी के [illegible] सामान, ग्लास पेंटिंग, टाई एण्ड डाई के खूबसूरत डिजाइन्स बनाते आकर्षक एवं परिधानों की [illegible] कला-कौशल का अद्भुत संगम था। रुड़की के आस-पास के क्षेत्रों, हरिद्वार तथा देहरादून [illegible] कला प्रेमी दर्शकों ने इस प्रदर्शनी का भरपूर आनन्द लिया। डा० [illegible] डा० [illegible], श्रीमती [illegible], सुश्री दीपिका तथा सुश्री अर्चना देवी के [illegible] उक्त प्रदर्शनी का आयोजन हुआ।

स्वावलम्बन

- चित्रकला विभाग की होनहार छात्राएं अपनी कला प्रतिभा के माध्यम से रोजगार प्राप्त कर आत्मनिर्भर [illegible] इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु उन्हें समुचित मार्गदर्शन और उपयुक्त मंच प्रदान करने हेतु [illegible] समय-समय पर विभिन्न गतिविधियाँ संचालित करता है जिसका विवरण निम्नवत है।
- दिनांक 02.10.2016 को 'My city my Pride Campaign - Roorkee' में छात्राओं ने [illegible] अपनी कलाकृतियों एवं हस्त शिल्प की वस्तुओं को विक्रय हेतु प्रदर्शित किया।
- दिनांक 16.10.2016 को 'स्वावलम्बन' के अन्तर्गत बी.ए. तथा एम.ए. की छात्राओं ने [illegible] आई.आई.टी. रुड़की द्वारा आयोजित दीपावली मेले में हस्तकला की विभिन्न वस्तुओं जैसे [illegible] कलात्मक, ज्वैलरी बाक्स, कागज के [illegible] पेंटिंग इत्यादि का प्रदर्शन किया। [illegible] ने छात्राओं की कलाकृतियों का बढ़-चढ़ कर क्रय किया।
- दिनांक 23.10.2016 को आई.आई.टी. रुड़की द्वारा आयोजित 'Youth festival THOMSO' [illegible] चित्रकला की 20 छात्राओं ने अपनी कलाकृतियों का प्रदर्शन किया।
- दिनांक 24.10.2016 को चित्रकला विभाग में छात्राओं द्वारा निर्मित हस्त शिल्प की विभिन्न वस्तुओं [illegible] प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। जिसमें महाविद्यालय की प्राध्यापिकाओं और छात्राओं ने [illegible] सामग्री का क्रय किया।
- दिनांक 06.02.2017 से 25.02.2017 तक श्रीमती [illegible] के दिशा निर्देशन में **'Clay Modelling workshop'** आयोजित की गई, जिसमें एम.ए. द्वितीय तथा चतुर्थ सेमेस्टर (चित्रकला) की छात्राओं [illegible] मिट्टी से मूर्तियां मूर्तित करने का विधिवत प्रशिक्षण प्राप्त किया।

अतिथि व्याख्यान/सेमिनार

- दिनांक 02.10.2016 गांधी जयन्ती के अवसर पर डा० [illegible] (पूर्व प्राचार्या) ने **'[illegible] और गांधी'** विषय पर व्याख्यान दिया।
- दिनांक 01.12.2016 (एड्स दिवस) को **'एड्स जागरूकता'** विषय पर डा० [illegible] सिंह, [illegible] रुड़की ने मुख्य वक्ता के रूप में व्याख्यान दिया।
- [illegible] दिवस पर छात्राओं के लिये डा० [illegible] जैन एसो० प्रोफेसर-राजनीतिशास्त्र ने व्याख्यान दि[illegible]

दिनांक 10.02.2017 को डा० भारती शर्मा (अंग्रेजी विभाग) एवं संस्कृत, हिन्दी और अंग्रेजी साहित्य की [illegible] परिषद के तत्वावधान में प्रोफेसर [illegible], [illegible] प्रोफेसर-अंग्रेजी भाषा, [illegible] विश्वविद्यालय, हरिद्वार ने **'Resources of Communication Skills'** विषय पर अपना व्याख्यान दिया।

अंतर्विभागीय सेमिनार

दिनांक 25.02.2017 को महाविद्यालय में डा० भारती शर्मा (अंग्रेजी विभाग) द्वारा **"Tribal Point of views with special reference to tribal community and a comparative study with that of modern society"** विषय पर अंतर्विभागीय सेमिनार का आयोजन किया गया। इस सेमिनार में जिन छात्राओं और प्राध्यापिकाओं ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किये उनका विवरण निम्नवत है-

Dr. Bharati Sharma (English Deptt.) "Importance of still living legends in literature"
Dr. Kamini Jain (Pol. Science) "Glimpses of Jaunsar Bawar Tribes"
Dr. [illegible] (Sociology Deptt.) Injustice to tribal Communities
Dr. [illegible] (Sociology Deptt.) Importance of taboos in tribal communities
Ms. [illegible] Prasad (Hindi Deptt.) "Women in Aadivasi Poetry"
Dr. [illegible] Roy (Hindi Deptt.) "Tribal Society and Education in Present Context"
Mrs. [illegible] Sharma Tribal Society and Education in Present Context
Ms. Deepa (Student) "Tribal literature: An Endeavour for survival of tribal and tradition"
Ms. [illegible] (Student) Munda Tribe Revisiting Modern Man oriented Society"
Ms. Sana (Student) "A thought Provoking talk on Munda Song."

उक्त सेमिनार की अध्यक्षता करते हुए डा० अर्चना मिश्रा (प्राचार्या) ने "Revisiting Mahashweta Devi in the context of Tribal Community" विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किये तथा Keynote speaker के रूप में [illegible] मिश्रा (भूतपूर्व अध्यक्ष [illegible] विभाग) ने सेमिनार के [illegible] की सार्थकता और [illegible] पर प्रकाश डाला।

Faculty of Science – Activities

- **An educational visit** – A group of 20 students visited various departments of C.B.R.I Roorkee 29.09.2016 on the occasion of foundation day of C.S.I.R. under the guidance of Dr. Asma Siddiqui and Mrs. Shelly Singhal.
- C.S.I.R. and C.B.R.I. organized a **'Faculty motivation and adoption of schools programme'** on 5.10.2016. It was attended by Dr. Asma Siddiqui, Mrs. Shelly Singhal and Mrs. Pallavi Singh.
- Second India International Science Festival and Technical Exhibition in C.B.R.I. Roorkee was visited by Dr. Rekha Singh and Dr. Uma Rani with a group of 20 students in November 2016.
- **An Essay writing Competition** was organized on the topic **'Relation of Science with Art and Culture'**
- Seminars were conducted on syllabus related topics by Chemistry, Botany, Maths and Physics Departments.
- **Project writing and assignments** were organized by all departments.
- **Chart making competition** was organized by Zoology department on various subject related topics.
- **Science Board Exhibit** was organized by Physics and Maths department on National Science Day (28th Feb., 2017). The exhibition had two categories in the direction of Dr. Jyotika and Mrs. Preeti Verma.

(ii) "**Science and Technology for specially abled persons :** In this category posters [illegible] scientific concepts, techniques, modules making life easier to specially abled persons [illegible] displayed. Posters illustrated varied aiding modules like walking sticks, [illegible] and wheel chairs etc.

(iii) **Contribution of specially abled persons in the field of science and technology:** [illegible] category mainly focused on imparting knowledge and generate inspiration [illegible] through depicting contribution of some eminent personalities in the field of science [illegible] Keller, Stephen Hawking and Charles Proteus Steinmetz etc. The event was [illegible] judged by the Principal Dr. Archana Mishra, Dr. Annpurna Garg, Dr. Parul Chaddha [illegible] Jaiswal and the winners were Vidhi Gupta (First), Prachi Saini (Second), Nishu [illegible]

- Seminar was organised by Maths and Physics Department jointly on the topic "**Role of [illegible] and Physics in daily life**", on 6.2.17

Career Guidance and Placement cell

Following activities were organized by the career Guidance and Placement cell under Supervision of Dr. Alka Arya, Dr. Kiran Bala, Ms. Anjali Prasad and Mrs. Shelly Singhal

- 23.09.2016 – Students of computer science attended a **workshop on "Cloud computing** [illegible] **COER**.
- 04.11.2016 – Registrations for **short hand typing** course organized by K.L. Polytechnic Roorkee. 10 Students have completed three months course (15 Nov. 2016 to 15 Feb 17)
- 16.11.2016 – **A seminar on Banking and S.S.C Jobs** was conducted by TIME (Triumphant Institute of Management Education Pvt. Ltd.)
- 27.12.2016 – **A lecture** was delivered by Mr. Lovleen and Mr. Harvinder Ji, officials [illegible] S.B.I. Roorkee) on **"Cashless and digital Economy"**
- 31.01.2017 – A **workshop** was organized on **"Improving learning skills, Motivation [illegible] career planning"** by Mr. Vikas Mehta and Mr. Kuldeep Ji (Faculty of M.M.U. Ambala)
- 22.03.2017 – A **workshop on Web designing** was conducted in computer science department by ZENUS Infotech Pvt. Ltd. Roorkee under the guidance of Mrs. Shelly Singhal
- 27.4.2017 – An entrance test for apprenticeship by TATA Chemical's was conducted for [illegible] (P.C.M.) Students under the guidance of Mrs. Shelly Singhal and Mrs. Pallavi Singh [illegible] Preeti Verma
- Registrations have been done under the **Prime-Minister Digital Literacy mission** - [illegible] for short term course.

[illegible] भित्ति पत्रिका

छात्राओं के [illegible] ज्ञान को बढ़ाने के उद्देश्य से महाविद्यालय के विभिन्न विभागों द्वारा [illegible] भित्ति पत्रिका के प्रति छात्राओं का सहज [illegible] रहा है। इसके विभिन्न [illegible] तथा [illegible] ज्ञान, [illegible] संस्कृति, पर्यावरण एवं स्वास्थ्य के साथ नवीन पाठ्यक्रमानुसार इस सत्र में अनेक [illegible] भी किये गये। इस शृंखला में डा० [illegible] (प्रभारी अंग्रेजी विभाग) ने [illegible] के अन्तर्गत [illegible] द्वारा [illegible] अंग्रेजी काव्य/साहित्य को अभिनय कला के माध्यम से प्रस्तुत करने का [illegible] विषय प्रत्येक विभाग द्वारा भित्ति पत्रिका के रूप में प्रदर्शित छात्राओं के आधार पर एक [illegible] भी आयोजित की गई।

[illegible] क्रीड़ा प्रतियोगिता

[illegible] शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है, इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए [illegible] आयोजन [illegible] प्रतियोगिताओं में छात्राएं बढ़-चढ़ कर भाग लेती हैं। क्रीड़ा समिति द्वारा वर्ष [illegible] आयोजित गतिविधियों का विवरण निम्नवत् है :

दिनांक 13.10.2016 को [illegible], [illegible] एवं [illegible] प्रतियोगिताएं सम्पन्न करायी गईं।

दिनांक 17.10.2016 से 28.02.2017 तक [illegible] प्रशिक्षण [illegible] की [illegible] की देखरेख में सम्पन्न हुआ, जिसमें महाविद्यालय की 124 छात्राओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। [illegible] में दिनांक 19.11.2016 [illegible] ने [illegible] में प्रतिभाग किया।

[illegible] 35 वां [illegible] दिनांक 26.11.2016 तक आयोजित [illegible]। दिनांक 14.12.2016 से 16.12.2016 तक वार्षिक क्रीड़ा प्रतियोगिता [illegible] के निर्देशन में सम्पन्न हुई जिसका शुभारम्भ [illegible] द्वारा किया गया। इस शृंखला में 100 मी०, 200 मी०, 400 मी० दौड़, [illegible] प्रतियोगिताएं सम्पन्न हुईं। दिनांक 16.10.2016 को [illegible], [illegible] (उपाध्यक्ष), [illegible] भूषण (कोषाध्यक्ष) एवं श्री [illegible] के अवसर पर श्री सुनील कुमार [illegible] द्वारा विजयी छात्राओं को पुरस्कार प्रदान किए गए। [illegible] (कार्यकारिणी सदस्य)। प्रबन्ध समिति की [illegible] में [illegible] प्रदान किया दिनांक 28.02.2017 को महाविद्यालय में [illegible] गया।

वार्षिक क्रीड़ा प्रतियोगिता: विजयी छात्राएं

[illegible] मीटर रेस	कु० मोहिनी	बी०ए०, तृतीय वर्ष	प्रथम स्थान
	कु० मनीषा	बी०ए०, प्रथम वर्ष	द्वितीय स्थान
	कु० हिमांशी सैनी	बी०ए०, द्वितीय वर्ष	तृतीय स्थान
[illegible] मीटर रेस	कु० मोहिनी	बी०ए०, तृतीय वर्ष	प्रथम स्थान
	कु० लक्ष्मी	बी०ए०, द्वितीय वर्ष	द्वितीय स्थान
	कु० स्वाति सिंह	बी०एससी०, तृतीय वर्ष	तृतीय स्थान
[illegible] मीटर रेस	कु० मोहिनी	बी०ए०, तृतीय वर्ष	प्रथम स्थान
	कु० लक्ष्मी	बी०ए०, द्वितीय वर्ष	द्वितीय स्थान
	कु० अंजू	बी०एससी०, द्वितीय वर्ष	तृतीय स्थान
[illegible]साइकिल	कु० [illegible]	बी०ए०, तृतीय वर्ष	प्रथम स्थान
	कु० [illegible]	बी०ए०, द्वितीय वर्ष	द्वितीय स्थान
	कु० प्रिया सैनी	बी०एससी०, द्वितीय वर्ष	तृतीय स्थान
[illegible]टपुट	कु० अंजली सिंह	बी०ए०, तृतीय वर्ष	प्रथम स्थान
	कु० शालू	बी०ए०, तृतीय वर्ष	द्वितीय स्थान
	कु० अंजू	बी०ए०, द्वितीय वर्ष	तृतीय स्थान

रिले रेस	कु० [illegible]	बी०ए०, तृतीय वर्ष
	कु० [illegible]	बी०ए०, तृतीय वर्ष
	कु० मीनाक्षी	बी०ए०, तृतीय वर्ष
	कु० [illegible] कौर	बी०एससी०, तृतीय वर्ष

रस्साकशी प्रतियोगिता में एम०ए०, प्रथम वर्ष एवं बी०ए०, प्रथम वर्ष की सम्मिलित टीम विजेता रही-

कु. [illegible] कश्यप, कु. [illegible], कु. [illegible] प्रवीन, कु. [illegible] प्रवीन, कु. [illegible], कु. [illegible], कु. अनीता, कु. [illegible], कु. [illegible] प्रवीन, कु. अंजू, कु. अंजू [illegible], कु. [illegible], कु. [illegible]

कबड्डी प्रतियोगिता में बी०एससी० द्वितीय वर्ष की सम्मिलित टीम विजेता रही-

कु. [illegible], कु. [illegible], कु. [illegible], कु. [illegible], कु. [illegible], कु. [illegible], कु. [illegible]
कु. [illegible], कु. नेहा, कु. [illegible], कु. मीनाक्षी

खो-खो प्रतियोगिता में बी०ए०, बी०एससी० चतुर्थ सेमेस्टर की सम्मिलित टीम विजेता रही-

कु. [illegible], कु. [illegible], कु. [illegible], कु. [illegible], कु. पूजा, कु. [illegible], कु. [illegible], कु. [illegible]
कु. [illegible], कु. [illegible], कु. [illegible], [illegible] गुप्ता, कु. [illegible], कु. [illegible], कु. [illegible]

इंडोर गेम्स

[illegible] -	कु. [illegible]	बी०एससी०, तृतीय वर्ष
	कु. [illegible] गुप्ता	बी०एससी०, द्वितीय वर्ष
कैरम-	कु. [illegible]	बी०एससी०, तृतीय वर्ष
	कु. [illegible]	बी०ए०, द्वितीय वर्ष

कु० [illegible], बी०ए०, तृतीय वर्ष ने खेलकूद प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए '[illegible]' प्राप्त की।

महाविद्यालय के श्रेष्ठता पुरस्कार

सर्वश्रेष्ठ छात्रा -		
[illegible]	कु० [illegible]	बी०ए०, तृतीय वर्ष
विज्ञान संकाय -		
[illegible]	कु० [illegible]	बी०एससी०, तृतीय वर्ष
[illegible]	कु० [illegible]	बी०एससी०, तृतीय वर्ष
सर्वश्रेष्ठ [illegible] -		
[illegible]	कु० [illegible]	बी०ए०, तृतीय वर्ष
[illegible]	कु० [illegible] शर्मा	एम०ए०, चतुर्थ सेमेस्टर
सर्वाधिक उपस्थिति -		
बी०ए०	कु० [illegible], कु० [illegible], कु० मीनाक्षी, कु० [illegible], कु० [illegible], कु० [illegible], कु० [illegible]	
बी०एससी०	कु० [illegible], कु० [illegible], कु० [illegible], कु० [illegible], कु० [illegible], कु० [illegible]	

[illegible] चित्रकला	कु० [illegible]
[illegible] राजनीति शास्त्र	कु० [illegible] शर्मा

[illegible] पुरस्कार / प्रोत्साहन राशि/ आर्थिक सहायता

विश्वविद्यालय [illegible] सूची में सर्वोच्च स्थान एवं स्वर्ण पदक प्राप्त करने वाली महाविद्यालय की दो मेधावी छात्राओं - कु. [illegible] देवी (एम.ए. चित्रकला) तथा कु. [illegible] (बी.ए. तृतीय वर्ष) को प्रबन्ध समिति द्वारा पुरस्कार स्वरूप रू० 1100/- धनराशि एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

[illegible] समारोह में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति में [illegible] प्रदान करने हेतु कु. [illegible] बी.एससी. तृतीय वर्ष को रू. 2100/- पुरस्कार स्वरूप दिये गये।

कु. [illegible] बी.एस.सी. द्वितीय सेमेस्टर की [illegible] हेतु प्रबन्ध समिति के सदस्य श्री [illegible] जी द्वारा आर्थिक सहायता प्रदान की गई।

बी.एससी. द्वितीय सेमेस्टर की छात्रा कु. [illegible] की [illegible], आई.आई.टी. रूड़की द्वारा दो शैक्षिक सत्रों क्रमशः 2016-2017 तथा 2017-2018 हेतु [illegible] रू. 12,000 का भुगतान किया गया।

[illegible] विभाग द्वारा आयोजित वार्षिक प्रदर्शनी 'अभिव्यक्ति' में [illegible] कार्य एवं महत्वपूर्ण योगदान हेतु नव-नियुक्त प्राध्यापिकाओं- श्रीमती [illegible] कश्यप, सुश्री [illegible] तथा सुश्री [illegible] को प्रबन्ध समिति द्वारा प्रोत्साहन राशि स्वरूप 2100/- (प्रति प्राध्यापिका) प्रदान किये गये।

[illegible] प्रकोष्ठ

[illegible]- '[illegible]' सूत्र वाक्य के साथ प्रारम्भ यह [illegible] छात्राओं को अपने [illegible] पुस्तकें पढ़ने के लिये प्रेरित करने के उद्देश्य से प्रारंभ की गई है। छात्राओं की बौद्धिक एवं [illegible] क्षमताओं का विकास हो सके इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिये 07.10.2016 को एक [illegible] आयोजन किया गया, जिसमें [illegible] द्वारा छात्राओं को सत्र पर्यन्त आयोजित होने वाली गतिविधियों की जानकारी दी गई। [illegible] द्वारा छात्राओं हेतु [illegible] की नवीन पुस्तक सूची, पुस्तक [illegible] बोर्ड का उद्घाटन किये गये।

[illegible] सत्र में छात्राओं द्वारा [illegible] प्रस्तुति, रचनात्मक लेखन (गद्य) एवं [illegible] आयोजित किये गये। हिन्दी पखवाड़े में आई.आई.टी. द्वारा आयोजित पुस्तक प्रदर्शनी का छात्राओं ने डा० [illegible] के [illegible] में अवलोकन किया जिसके उपरान्त छात्राओं ने वहाँ [illegible] साहित्यकारों की पुस्तकों के [illegible] अंश [illegible] बोर्ड पर भी लगाये। सत्र पर्यन्त छात्राओं ने अपने पाठ्यक्रम के अतिरिक्त अन्य नवीन पुस्तकों का पठन-पाठन किया एवं कुछ [illegible] विचारों का [illegible] बोर्ड पर प्रदर्शित कर आदान-प्रदान किया।

ग्रीन ब्रिगेड

"[illegible]" सूत्रवाक्य के साथ आरंभ की गई ग्रीन ब्रिगेड [illegible] को [illegible] स्वच्छता अभियान एवं पर्यावरण जागरूकता के लिए सक्रिय योगदान दे रही है। [illegible] "[illegible] में पूरा देश" का लक्ष्य प्राप्त करने हेतु [illegible] है। दिनांक 6.10.2016 को एक [illegible] बैठक का आयोजन किया गया जिसमें सत्रपर्यन्त स्वच्छता कार्यक्रम संचालित करने के लिये छात्राओं द्वारा [illegible] व महाविद्यालय [illegible] की [illegible] हेतु [illegible] सुनिश्चित किये गये। दिनांक 14.10.2016 को [illegible], 12.10.2016 को [illegible] एवं [illegible], 12.12.2016 को [illegible] एवं [illegible], 13.02.2017 को [illegible] एवं [illegible] के

[illegible] ने [illegible] को [illegible] एवं सुन्दर बनाने में सक्रिय योगदान किया। [illegible]
[illegible] के अपने [illegible] क्षेत्रों में भी [illegible]
[illegible] में सक्रिय योगदान दिया।

अन्य विशिष्ट उपलब्धियाँ

- [illegible] की [illegible] में दिनांक 6 अक्टूबर 2016 को [illegible] "Regulations are more Essential than Ethics for a Strong Economy" [illegible] आयोजित **अन्तर्महाविद्यालयी वाद-विवाद प्रतियोगिता** में महाविद्यालय की कु० [illegible] (बी.एससी. [illegible]) ने [illegible] दिनांक 21.02.2017 को [illegible] रुड़की द्वारा आयोजित **अन्तर्महाविद्यालयी रंगोली प्रतियोगिता** [illegible]
- [illegible] कु० [illegible], कु० [illegible] तथा कु० [illegible] ने [illegible] एवं [illegible] की उत्तम प्रस्तुति ने [illegible] अर्जित की।
- [illegible] द्वारा दिनांक 5.11.2016 एवं दिनांक 10.11.2016 को [illegible] **संस्कृति ज्ञान परीक्षा** में महाविद्यालय की 41 छात्राओं ने प्रतिभागिता की और [illegible] कु० [illegible], बी.ए., प्रथम वर्ष ने [illegible] पदक, कु० [illegible] द्वितीय वर्ष ने [illegible], कु० [illegible], बी.ए., प्रथम वर्ष ने [illegible] पदक प्राप्त कर महाविद्यालय का [illegible]
- दिनांक 14.01.2017 को [illegible] इन्स्टीट्यूट रुड़की द्वारा आयोजित **[illegible]** [illegible] में [illegible] कु० [illegible] बी.ए., द्वितीय सेमेस्टर ने [illegible] "Futuristic View of GDP Through GST" विषय पर Power Point Presentation [illegible]
- [illegible] द्वारा आयोजित **All India Essay Writing Event 2016 Category** [illegible] महाविद्यालय की [illegible] बी.ए., [illegible] की विशिष्ट कृति के लिये [illegible] गया।

IQAC - वर्ष 2016-2017 के लिये महाविद्यालय में गठित आंतरिक गुणवत्ता सुनिश्चितता समिति (IQAC) [illegible] श्री सुनील [illegible] जी, प्राचार्या डा० अर्चना मिश्रा, [illegible] (Community member) डा० [illegible] (Community member) डा० अनुपमा गर्ग (Coordinator) [illegible] (Secretary) डा० भारती शर्मा, डा० कामना जैन, श्रीमती [illegible], श्री [illegible] डा० [illegible] (member), कु० [illegible] तथा कु० [illegible] (Student member) ने [illegible] में [illegible] Short term और Long term goals निर्धारित करने तथा उनके [illegible] हेतु [illegible] समिति, [illegible], पुस्तकालय [illegible], कार्यालय कार्य, बी.ए., बी.एस.सी. तथा एम.ए. की [illegible] [illegible] में अल्पकालीन लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में [illegible] गए।

प्राध्यापिका वर्ग की उपलब्धियाँ

Dr. Archana Mishra

- [illegible] 'पुं हे मेरे मैं' ISBN 978-81-93211-5-9 का प्रकाशन, प्रकाशक [illegible]
- Published Research Paper [illegible] in Aparajita Research journal issue-2, 2015-16, ISSN 2452-4310

Attended one day training cum Sensitization workshop on Process of NAAC assessment and Accreditation for IQAC Coordinators on 5 Dec. 2016 in B.S.M. PG College, Roorkee

Anupam Garg

Published Research Paper "Twelve Olympiads" in Aparajita Research journal issue - 2, 2015-2016, ISSN 2452-4310

Attended one day training cum sensitization workshop on process of NAAC Assessment and Accreditation for IQAC coordinators on 5 Dec. 2016 in B.S.M. PG College, Roorkee

Alka Arya

Published Research Paper "[illegible]" in 'APARAJITA' an multidisciplinary Research journal Vol-2 ISSN 2454-4310, P. No. - 29

Published Research Paper "[illegible]" in an International Refereed & Blind Peer reviewed multidisciplinary Research Journal ISSUE - 4 year 2 P. No. - 74-76

Participated in 10th All India Contemporary Art Exhibition, organized by Art Deptt. D.P.S. Ranipur, Haridwar, Feb 2017.

Participated in All India National Art Exhibition "ANUBHUTI" 02, organized by Visual Art Department, Kumaun University, S.S.G Campus, Almora on 1st to 4th June 2017.

Bharti Sharma

[illegible] in Journal [illegible], ISSN: 2229-6581 Vol XVIII 2015, UGC HRDC, Himachal Pradesh University, Summer Hill Shimla, p.1-13

Relevance of Vedic Aachar Darshan, in Journal Aparajita, ISSN 2454-4310, 2016 P.79

Represented in WAVES 2016 International Conference, at Bharatiya Vidya Bhawan, New Delhi from 15 to 18 Dec. 2016

Gyan Vigyan in the Mahabharata, published in Souvenir WAVES 2016 International Conference Bharatiya Vidya Bhawan, P. 31.

Attended Refresher Course in English held from 12/09/2016 - 01/10/2016 from UGC HRDC, Himachal Pradesh University, Summer Hill, Shimla

Presented one paper in national and two papers in International Conference.

Kamna Jain

Completed Refresher Course : HRDC, New Delhi (25-07-2016 - 19-08-2016)

Completed Refresher Course : HRDC, GNDU, Amritsar, (23-12-2016 - 12-01-2017)

Published Research Paper "[illegible]" in Aparajita Research Journal, Issue - 2, 2015-16, ISSN No. 2452-4310, P.No. 42.

Presented 5 Paper in National Seminar and International Conference.

Kiran Bala

Published Paper "Religion and Communalism in India in International Journal "Third concept" July 2016, ISSN 0970-7247.

Published Research Paper "ओ.बी.सी. वर्ग की महिलाओं की राजनीतिक स्थिति: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन" in Peer Reviewed Journal "Samaj Vigyan Shodh Patrika" April-Sept 2016, ISSN 0973-7626

Published Research Paper "[illegible]" in Aparajita Research Journal, Vol. 2, 2016, ISSN No. 2454-4310

- Published Paper "विश्वविद्यालय में छात्र राजनीतिः एक विश्लेषण" in [illegible] Vol. 2, 2016
- Presented 6 Papers in National and International Seminars.

Dr. Archana Chauhan

- Participated in making of Longest Painting for Guinness Book of world record in November 2016.
- Presented 3 research papers in National and International Conference.

Ms. Anjali Prasad

- Completed Refresher course, HRDC, Shimla on 13-06-2016 to 20-07-2016.
- Presented 2 Research Papers in National Seminar.

Dr. Anju Sharma

- Published Research Paper "[illegible] की उपन्यासों में [illegible]" in [illegible] Social Sciences and Humanities, ISSN No. 2348-3318, ISSUE - 01 June 2017 [illegible]
- Presented 2 Research Papers in National seminar and Attended 1 Seminar.

राष्ट्रीय सेवा योजना (सत्र 2016-2017)

महाविद्यालय में कार्यक्रम अधिकारी डा० किरन बाला के निर्देशन में स्वयंसेवी छात्राओं द्वारा [illegible] संचालित की गईं -

दैनिक गतिविधियाँ:

01.10.2016 - [illegible] दिवस के अवसर पर व्याख्यान तथा छात्राओं द्वारा लघु नाटिका का मंचन।

19.10.2016 - महाविद्यालय में स्वच्छता कार्यक्रम का आयोजन, कार्यक्रम अधिकारी डा० किरन बाला [illegible] [illegible] कृषि [illegible] के विषय में छात्राओं को जानकारी।

05.11.2016 - [illegible] अभियान के अन्तर्गत रैली का आयोजन, जिसमें छात्राओं ने [illegible] में भाग लिया।

21.11.2016 - "स्वच्छता एवं पर्यावरण" विषय पर पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन।

10.12.2016 - विश्वमानवाधिकार दिवस के अवसर पर संगोष्ठी का आयोजन जिसमें मुख्य वक्ता [illegible] ने छात्राओं को विषय से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण जानकारी दी।

20.12.2016 - छात्राओं को VISAKA (वित्तीय साक्षरता अभियान) की कार्ययोजना [illegible] छात्राओं का [illegible] तथा [illegible] देने के लिए छात्राओं का अलग-अलग समूहों में विभाजन किया [illegible]

27.01.2017 - VISAKA वर्कशाप का आयोजन जिसमें एस.बी.आई. के श्री [illegible] तथा श्री [illegible] [illegible] विषय से सम्बन्धित जानकारी प्रदान की।

07.01.2017 - VISAKA के अन्तर्गत स्वयंसेवी छात्राओं द्वारा किये गये कार्यों की समीक्षा।

एक दिवसीय शिविर:-

24.09.2016 - [illegible] स्थापना दिवस को स्वच्छता दिवस के रूप में मनाया गया। जिसमें [illegible] स्वच्छता कार्यक्रम आयोजित किये गये।

[illegible].2016 - [illegible] जयन्ती के अवसर पर [illegible] तथा पूर्व प्राचार्या एवं [illegible] डा० [illegible] द्वारा [illegible] किया गया। छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किये।

[illegible].2016 - राज्य स्थापना दिवस के अवसर पर स्वच्छता अभियान, विचार लेखन प्रतियोगिता, व्याख्यान, [illegible] आयोजित किये।

[illegible].2016 - [illegible] दिवस के अवसर पर डा० [illegible] सिंह, आई. एस.ए. विशिष्ट व्याख्यान तथा रैली [illegible] का आयोजन किया गया।

[illegible].2016 - सांस्कृतिक [illegible] प्रशिक्षण कार्यशाला के अन्तर्गत श्रीमती [illegible] के द्वारा छात्राओं [illegible]

[illegible].2017 - [illegible] कौशल प्रशिक्षण कार्यशाला [illegible] [illegible] शिल्प जैसे- [illegible] इत्यादि का तकनीकी [illegible] प्रदान किया।

[illegible] शिविर:- शिविर का शुभारम्भ दिनांक 30.01.2017 को [illegible] ग्राम में प्राचार्या डा० [illegible] द्वारा किया गया। शिविर के दौरान छात्राओं ने स्वच्छता, [illegible] [illegible] की [illegible] से [illegible] [illegible] [illegible] इत्यादि विषयों पर रैली, चर्चा, परिचर्चा, [illegible] के माध्यम से ग्रामीणों को [illegible] [illegible] इत्यादि पर [illegible] आधारित सर्वे किया गया। [illegible] हेतु ग्रामीणों [illegible] [illegible] इत्यादि पर [illegible] कार्यक्रम भी संचालित किये गये। शिविर के [illegible] [illegible] किया गया। [illegible] में वृक्षारोपण तथा [illegible] कार्यक्रम की [illegible] [illegible] बच्चों को लिखना-पढ़ना सिखाया गया, इसके साथ विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की [illegible] छात्राओं ने ग्रामीण बच्चों को [illegible] कार्यक्रमों के साथ शिविर का समापन समारोह हुआ। दिनांक 05.02.2017 को [illegible]

[illegible]

दिनांक : 30.09.2016 को महाविद्यालय में रेड रिबन क्लब का गठन कर 20 छात्राओं को [illegible] के [illegible] [illegible] अनेक गतिविधियाँ संचालित की गईं। [illegible] दिनांक : 01.10.2016 [illegible] [illegible] अधिकारी डा० किरन बाला ने [illegible] का महत्त्व [illegible] एवं [illegible] दिवस मनाया गया जिसमें कार्यक्रम अधिकारी डा० किरन बाला ने [illegible] [illegible] [illegible] एक लघु नाटिका प्रस्तुत की दिनांक : 01.12.2016 को [illegible] [illegible] की [illegible] की व्यावहारिक जानकारी दी तथा [illegible] शिविर के दौरान छात्राओं ने ग्राम [illegible] सिंह ने छात्राओं को [illegible] [illegible] नाटिका के माध्यम से ग्रामवासियों को जागरूक किया।

विद्यालय विकास गतिविधियाँ

[illegible] 2016-17 में प्रबंध समिति द्वारा महाविद्यालय पुस्तकालय के upgradation हेतु प्रक्रिया प्रारंभ की गई है। [illegible] [illegible] की नवीन CBCS पाठ्यक्रम लागू होने के बाद से अतिरिक्त व्याख्यान कक्षों की आवश्यकता को दृष्टिगत [illegible] [illegible] नवीन कक्षों के निर्माण का निर्णय लिया गया। प्रबंध समिति द्वारा पैनल निरीक्षण एवं स्वर्ण जयंती समारोह हेतु [illegible] रख-रखाव, साज-सज्जा सम्बन्धी अनेक कार्य किये गये। परिसर में शिक्षण [illegible] की पूर्ति करने [illegible] अतिरिक्त शिक्षकों की नियुक्ति और साथ ही प्रयोगशाला हेतु उपकरणों की व्यवस्था की गई।

मेधावी छात्राएं (सत्र 2015-16)

कला संकाय

बी०ए० (तृतीय वर्ष) में सर्वाधिक अंक

विश्वविद्यालय वरियता सूचि में प्रथम स्थान

बी०ए० तृतीय वर्ष में प्रथम श्रेणी

विज्ञान संकाय (सत्र 2015-16)

बी०एससी० तृतीय वर्ष में सर्वाधिक अंक (जीव-विज्ञान संवर्ग)

विश्वविद्यालय वरियता सूचि में छठा स्थान

जीव विज्ञान संवर्ग में प्रथम श्रेणी

विज्ञान ... 2015-16)

बी०एससी० तृतीय वर्ष में सर्वाधिक अंक (गणित संवर्ग)

कु० शिल्पा गौड़

विश्वविद्यालय वरीयता सूचि में चतुर्थ स्थान

बी०एससी० तृतीय वर्ष में प्रथम श्रेणी

मेधावी छात्राएँ (सत्र-2015-16)

एम०ए० द्वितीय वर्ष में सर्वाधिक अंक

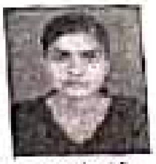

कु० अर्चना देवी

विश्वविद्यालय वरीयता सूची में प्रथम स्थान (गोल्ड मेडेलिस्ट)

एम०ए० द्वितीय वर्ष चित्रकला में प्रथम श्रेणी

मेधावी छात्राएँ (सत्र 2015-16)

एम०ए० द्वितीय वर्ष राजनीति विज्ञान में सर्वाधिक अंक

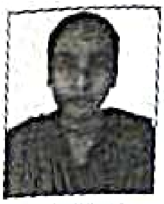

कु० गुलशाना
महाविद्यालय में सर्वाधिक अंक

एम०ए० द्वितीय वर्ष राजनीति विज्ञान में प्रथम श्रेणी

कु० कहकशा

कु० आराधना देवी

कु० साबिया अहमद

कु० अंशु गिरि

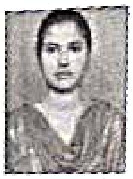

कु० पूजा

कु० आरती

कु० प्रियंका गिरि

कु० स्वाति

कु० संयोगिता

कु० गुलफशा बेगम

कु० शिखा सैनी

शैक्षिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ

शैक्षिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ

वार्षिक क्रीड़ा प्रतियोगिता

विभाग गतिविधियाँ

चित्रकला विभाग गतिविधियाँ

चित्रकला विभाग - स्वावलम्बन

विज्ञान संकाय गतिविधियाँ

शैक्षणिक भ्रमण

महाविद्यालय शिक्षक परिवार

प्रथम पंक्ति (बायें से दायें) :– डा० स्वर्णलता मिश्रा, डा० उमा शर्मा, सुश्री अर्जाति प्रसाद, डा० अर्चना चौहान, डा० कामना जैन, डा० अनुपमा गर्ग, डा० अर्चना मिश्रा (प्राचार्या) डा० अलका आर्या, डा० भारती शर्मा, श्रीमती शालो सिंघल, डा० रेखा सिंह।

द्वितीय पंक्ति (बायें से दायें) :– डा० ज्योतिका, सुश्री हिमानी, श्रीमती ज्योति शर्मा, डा० वीणा राय, श्रीमती पल्लवी सिंह, डा० पारुल, डा० अस्मा सिद्दीकी, सुश्री दीपिका, श्रीमती श्वेता अग्रवाल, डा० शालिनी शर्मा, डा० किरन बाला।

तृतीय पंक्ति (बायें से दायें) :– सुश्री महनाज, सुश्री नमिता जायसवाल, श्रीमती प्रीति वर्मा, डा० अन्जू शर्मा, सुश्री परवीन, डा० रुचि गहलौत, श्रीमती मीनाक्षी कश्यप सुश्री अर्चना देवी, सुश्री करुणा।

महाविद्यालय शिक्षणेत्तर परिवार

प्रथम पंक्ति (बायें से दायें) :– श्री संदीप कुमार, श्री विनोद कुमार, श्री शिव मंगल, श्री निशांत पंडित, श्री राकेश कुमार, डा० अर्चना मिश्रा (प्राचार्या)
श्री अनुज सिंघल, श्रीमती नीतू तायल, सुश्री सुषमा देवी, श्रीमती सुषमा कटारिया

द्वितीय पंक्ति (बायें से दायें) :– श्रीमती नीलम, श्री सतीश कुमार, श्री राजेश कुमार, श्री राजपाल, श्री [illegible] शर्मा, श्री [illegible]

पत्रिका समिति

प्रथम पंक्ति (बाएं से दाये) – डा० अनुपमा गर्ग, डा० अर्चना मिश्रा (प्राचार्या), डा० अलका आर्या, डा० अस्मा सिद्दीकी
द्वितीय पंक्ति (बाएं से दाये) – कु० गुलफशा, कु० रुमाना, कु० शैला शेखर

अनुशासन समिति

म पंक्ति (बाएं से दाये) – सुश्री ज्योति शर्मा, डा० पारुल चढ्ढा, सुश्री अंजलि प्रसाद, डा० कामना जैन, डा० अर्चना चौहान, डा० अर्चना मिश्रा (प्राचार्या), डा० भारती शर्मा, डा० असमा सिद्दीकी, श्रीमती शैली सिंघल
ीय पंक्ति (बाएं से दाये) – कु० आयुषी कौशिक, कु० शीबा, कु० मनीषा सैनी, कु०गुलशाना, कु० नाजिया, कु० गुलफशा, कु० गुलफशा, कु० सोनम, कु० वर्षा
ीय पंक्ति (बाएं से दाये) – कु० निशि त्यागी, कु० निशु, कु० गायत्री, कु० शालु, कु० गुलफशा, कु० मोहसीना, कु० शाहून, कु० छवि आदि।

माननीय अतिथिगण एवं महाविद्यालय परिवार

याद करो कुर्बानी पखवाड़ा

(9.8.2016 से 23.8.2016 तक)

[illegible] महाविद्यालय प्रबन्ध समिति के पदाधिकारियों, प्राचार्य एवं [illegible]
करने वाले पूर्व छात्राओं इत्यादि का [illegible] एवं आभार प्रकट किया। अतिथि वृन्द के [illegible]
[illegible] एवं पुष्प [illegible] के पश्चात [illegible] "[illegible]" की ध्वनि की [illegible] ने सम्पूर्ण [illegible]
"[illegible] शुभ-स्वागतम्, [illegible]" [illegible] सुश्री [illegible] मुख्य [illegible] नृत्य निर्देशन तथा [illegible]
[illegible] के निर्देशन में [illegible] एवं [illegible] अर्पण कर्म किया था।

[illegible] और [illegible] कार्य से पूर्व दीप प्रज्वलित कर जीवन को प्रकाशित करने का शुभ [illegible] संस्कृति और [illegible] का प्रतीक है। [illegible] करते हुए माँ सरस्वती [illegible] सुमधुर [illegible] आशीष मुझे सम्यगे। यत् बुद्धि विकासाय दीप ज्योतिर्नमोऽस्तु [illegible] के कलाकारों के दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारम्भ [illegible] के बाद [illegible] महाविद्यालय की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुये वर्ष 2016 [illegible] डा० [illegible] प्राचार्य ने [illegible] स्थान प्राप्त करने वाली छात्राओं का अभिनंदन [illegible] विश्वविद्यालय [illegible] में [illegible] की सुनहरी आभा में चार चांद वृद्धि कर दी है।
[illegible]

[illegible] शोध पत्रिका का विमोचन- डा० [illegible] मुख्य संपादिका, डा० अनुपमा [illegible] महाविद्यालय से प्रकाशित होने वाली शोध पत्रिका ISBN No. 24[illegible] के दूसरे अंक का विमोचन मुख्य [illegible]
(An Annual Multi disciplinary Research Journal) [illegible]
अतिथि द्वारा किया गया।

■ **वार्षिक चित्र एवं हस्तकला प्रदर्शनी अभिव्यक्ति के रंगीन कैटेलॉग का विमोचन** - इस [illegible] वार्षिक प्रदर्शनी 'अभिव्यक्ति' के साथ ही चुनी हुई कलाकृतियों के [illegible] चित्रकला विभाग द्वारा आयोजित [illegible] डा० अलका आर्य के दिशा निर्देशन में संयोजित इस कैटेलॉग [illegible] रंगीन कैटेलॉग का प्रकाशन किया गया। [illegible] की लगभग 60 छात्राओं की कलाकृतियों को [illegible] प्राध्यापिकाओं एवं [illegible] परिपूर्ण इस चित्र [illegible] का मुख्य अतिथि द्वारा विमोचन अविस्मरणीय रहा।

अलंकरण/सम्मान

[illegible] समिति के अध्यक्ष माननीय श्री [illegible] तथा उपाध्यक्ष श्री [illegible] जी द्वारा इस [illegible]
डा० [illegible] सक्सेना (पूर्व प्राचार्या), तथा पूर्व प्राध्यापिकाओं डा० कुसुमलता गोस्वामी, डा० [illegible] शर्मा, [illegible] श्रीमती मंजु अग्रवाल, डा० अंजु अग्रवाल तथा डा० स्वर्णलता मिश्रा का उत्कृष्ट [illegible] अलंकरण किया गया। महाविद्यालय सुदीर्घ [illegible] में अपने अविस्मरणीय कृतित्व से संस्था को [illegible] को सम्मानित करना महाविद्यालय [illegible] गौरव का क्षण था।

महाविद्यालय की सुदीर्घ विकास यात्रा में अपनी अविस्मरणीय सेवायें प्रदान करने वाली ज्ञान गरिमा [illegible] पूर्व प्राचार्य एवं प्राध्यापिकाओं, जिन्होंने अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व से संस्था की शिक्षा के [illegible] प्रतिष्ठित किया, का स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर अलंकरण किया गया-

इस अवसर पर सेवानिवृत्त कार्यालय सहयोगियों सुश्री [illegible] शर्मा जी (पुस्तकालयाध्यक्ष) श्री [illegible] जी एवं श्री राकेश कुमार शर्मा जी (कार्यालय अधीक्षक) तथा श्री [illegible] जी (चौकीदार) को [illegible] सेवाकाल के लिये सम्मानित किया गया।

महाविद्यालय की अनेक ऐसी पूर्व छात्रायें हैं जिन्होंने अपनी शैक्षिक योग्यता और [illegible] के द्वारा विशिष्ट उपलब्धियाँ अर्जित की। ऐसी विभिन्न [illegible] को सुशोभित कर महाविद्यालय का गौरव बढ़ाने वाली पूर्व छात्राओं [illegible] इन विशिष्ट [illegible] डा० सुनीता गुप्ता, प्राचार्य-[illegible] हिन्दू कालेज, [illegible] एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र [illegible] को अलंकृत किया गया।

[illegible] छात्राओं का सम्मान

[illegible] 2015-2016 में विश्व विद्यालय मेरिट लिस्ट में सर्वोच्च स्थान एवं स्वर्ण पदक अर्जित कर महाविद्यालय [illegible] छात्राओं कु० [illegible], एम. ए. [illegible] एवं कु० [illegible] मुख्य अतिथि द्वारा सम्मानित होने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

[illegible] *Glorious 50 years* -

[illegible] के अवसर पर पांच दशकीय उपलब्धिपूर्ण अतीत और वर्तमान उपलब्धियों की एक [illegible] के माध्यम से प्रदर्शित किया गया। [illegible] के माध्यम से महाविद्यालय के स्थापना काल की [illegible] कला-संस्कृति, [illegible] पूर्ण सांस्कृतिक और शैक्षिक क्रियाकलापों, [illegible] उपलब्धियों और भविष्य की [illegible] योजनाओं पर प्रकाश डाला गया। विभिन्न [illegible] डा० अलका आर्य के [illegible] से सज्जित 'ग्लोरियस फिफ्टी' [illegible] स्वर्ण जयन्ती समारोह में उपस्थित जनसमूह के आकर्षण का मुख्य केन्द्र रहा।

[illegible] और छात्रावृंद के [illegible]

[illegible] एवं निर्देशन - डा० अर्चना [illegible], डा० [illegible], डा० अलका आर्य
- [illegible], श्रीमती [illegible]
- श्रीमती मंजू [illegible], श्री [illegible]

[illegible] कार्यक्रम -

महाविद्यालय सांस्कृतिक समिति के सदस्यों - डा० भारती शर्मा, डा० कामना जैन, डा० अर्चना चौहान, डा० [illegible], डा० [illegible] तथा संगीत विभाग के दिशा निर्देशन में स्वर्ण जयन्ती समारोह में विभिन्न मनोरंजक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का मंच पर प्रदर्शन हुआ, जिसकी प्रस्तुति इस प्रकार है-

[illegible] राज्यगीत -

उत्तराखण्ड की पावन धरती शिव और पार्वती की क्रीड़ास्थली है यहाँ तो यहाँ कंकर-कंकर में शंकर का [illegible] है। रामायण, महाभारत, स्कन्द पुराण आदि सभी प्राचीन ग्रन्थों में उत्तराखण्ड को देवभूमि मानकर [illegible] किया गया है। इसी [illegible] का गायन छात्राओं ने अपनी मधुर वाणी में प्रस्तुत कर सबका मन मोह लिया। [illegible] 'उत्तराखण्ड देवभूमि, मातृभूमि शत-शत वन्दन अभिनन्दन' प्रस्तुति को विद्वानों की [illegible] ने खूब सराहा।

[illegible] - डा० [illegible], डा० [illegible]

[illegible] छात्रायें - कु० [illegible], कु० [illegible], कु० [illegible], कु० [illegible], कु० [illegible], कु० [illegible], कु० [illegible], कु० [illegible], कु० [illegible]
[illegible]

[illegible] पेंटिंग शो - चित्रकला विभाग अपने उत्कृष्ट क्रिया कलापों और नूतन विधाओं का प्रदर्शन समय-समय पर [illegible] रहा है। स्वर्ण जयंती की वेला में विभाग के इसी बहुआयामी परिदृश्य और [illegible] का प्रदर्शन '[illegible] पेंटिंग' के अभिनव प्रयोग द्वारा किया गया।

चित्रकला विभाग के ऐतिहासिक वैभव को भारतीय लघु चित्रण की विभिन्न शैलियों - अपभ्रंश, मुगल, [illegible] किशनगढ़, कांगड़ा तथा कलमकारी शैली को सम्मोहक [illegible] के माध्यम से कला एवं [illegible] की [illegible] प्रस्तुति की। [illegible] भारतीय कला शैलियों में प्रदर्शित 'नायिका भाव' एवं संगीत [illegible] मंच पर प्रस्तुति कला, शैलियों को दर्शकगण का एक अभूतपूर्व अनुभव था।

संयोजन एवं दिशा निर्देशन - [illegible]

प्रतिभागी छात्राएं - कु० [illegible], कु० [illegible], कु० [illegible], कु० [illegible], कु० [illegible], कु० [illegible], कु० [illegible] [illegible]

दुर्गा स्तुति- नृत्य प्रस्तुति

[illegible]

पौराणिक और धार्मिक मान्यतानुसार माँ देवी दुर्गा शक्ति स्वरूपा है, जिसकी स्तुति से मानव जीवन [illegible] कष्ट और विपदाओं का निवारण हो जाता है। इसी दुर्गा देवी के रूप में समाहित स्त्री शक्ति की [illegible] 'दुर्गा स्तुति' नामक सामूहिक नृत्य के माध्यम से मंच पर अत्यन्त प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया।

निर्देशन एवं मंच संचालन - [illegible]

प्रतिभागी छात्राएं - कु० [illegible], कु० [illegible], कु० [illegible], कु० [illegible], कु० मनीषा, कु० [illegible] इत्यादि।

सम्मोहक योग प्रस्तुति

योग भारत की प्राचीन परम्परा का एक अमूल्य उपहार है। यह मनुष्य के मन शरीर और आत्मा की [illegible] एकीकरण और प्रकृति तथा मनुष्य के बीच सामंजस्य स्थापित करने का सर्वसिद्ध मार्ग है। [illegible] आधुनिक विज्ञान भी योग की चमत्कारिक क्षमताओं को स्वीकार कर चुका है और इसीलिये [illegible] विद्या को वैश्विक स्तर पर भी मान्यता प्राप्त हो चुकी है।

योग की इसी सर्वव्यापी महत्ता और उपयोगिता को विभिन्न यौगिक मुद्राओं के [illegible] और [illegible] मंत्रों के संगीतमय स्वरों के साथ प्रदर्शित कर छात्राओं ने लोगों को अतिव्यस्त जीवन शैली से उत्पन्न [illegible] शांति और सन्तुलन की प्राप्ति हेतु योग की ओर प्रवृत्त होने का संदेश दिया।

निर्देशन एवं मंच संचालन - डा० [illegible]

प्रतिभागी छात्राएं - कु० [illegible], कु० [illegible], कु० [illegible], कु० [illegible], कु० [illegible], कु० [illegible] और कु० [illegible] इत्यादि।

'ऋतु रंग' नृत्य प्रस्तुति

ग्रीष्म, वर्षा, शरद, शिशिर हेमंत और बसंत, जीवन में बिखरे हैं कई और रंग अनन्त।।

संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान महाकवि कालिदास की महान काव्य-रचना 'ऋतुसंहार' उनकी [illegible] अभिव्यक्ति मानी जाती है। इस कृति में कवि ने अपनी प्रिया को सम्बोधित कर छः ऋतुओं का [illegible] किया है। नैसर्गिक सुषमा के अनुरूप अतिशय मनोहर कल्पनाओं से परिपूर्ण इस काव्य सौन्दर्य की [illegible] छात्राओं ने प्रकृति के सर्वव्यापी वैभव और लालित्य को अपनी मनमोहक वेशभूषा एवं भावभंगिमाओं [illegible] रूप में अभिव्यक्त कर समस्त ऋतुओं से सम्पूर्ण जगत के लिये मंगलकारी होने की अभ्यर्थना की।

निर्देशन एवं मंच संचालन - डा० [illegible]

प्रतिभागी छात्राएं - कु० [illegible], [illegible], कु० [illegible], कु० [illegible], कु० [illegible], कु० [illegible], कु० [illegible] और कु० [illegible] इत्यादि।

सांस्कृतिक प्रदर्शन

महाविद्यालय में छात्राओं को प्रतिवर्ष आयोजित [illegible] की [illegible] छात्राओं को उनकी अन्तर्निहित प्रतिभाओं और कलाओं को [illegible] सांस्कृतिक कार्यक्रमों की अंतिम कड़ी [illegible] आयोजित हो गई। 'झांसी लक्ष्मी बाई' और 'दुर्गावती' [illegible] इसी धरा पर [illegible] कठोर संघर्षों और [illegible] प्रस्तुत किया।

दिशा निर्देशन - डा० [illegible]

ध्वनि प्रभाव - श्री [illegible]

प्रतिभागी छात्राएं - कु० [illegible], [illegible], कु० [illegible], कु० [illegible], कु० [illegible], कु० [illegible] इत्यादि।

डा० [illegible]
संयोजक
सूचना स्रोत - [illegible] एवं [illegible] समिति

डॉ० [illegible]
प्राचार्य

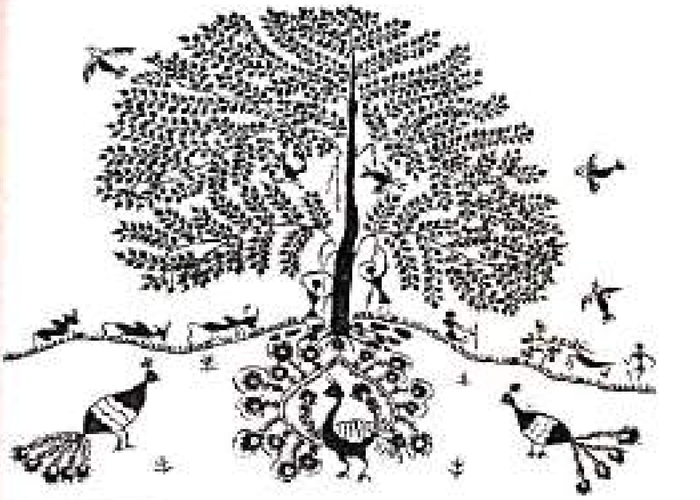

जिसका ह्रास न हो, वही सनातन है।

[illegible]

सनातन धर्म की [illegible] ... आज की युवा पीढ़ी को [illegible] ... और ज्ञान-विज्ञान के साथ अपनी [illegible] ... की भौतिक आँखों से [illegible] ... 'पिछले 60 वर्षों में [illegible] ... कार्यक्रम किसी महाविद्यालय अथवा विश्वविद्यालय [illegible] ... मैं हृदय से कहता हूँ कि मैं [illegible] ... आयोजन जहाँ [illegible] ... सराहना के योग्य है।

[illegible] ने [illegible] कार्यक्रमों ने सनातन धर्म के [illegible] ... मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि [illegible] महाविद्यालय शिक्षा और संस्कृति के क्षेत्र में उत्तरोत्तर उन्नति करता जाये और अपने [illegible] तक अनेक नवीन कीर्तिमान स्थापित करे।

संकलित - डा॰ [illegible]

स्वर्ण जयन्ती समारोह - झलकियाँ

स्वर्ण जयन्ती समारोह - झलकियाँ

अलंकरण

स्वर्ण जयन्ती समारोह - झलकियाँ

सांस्कृतिक कार्यक्रम

स्वर्ण जयन्ती समारोह - झलकियाँ

सांस्कृतिक कार्यक्रम

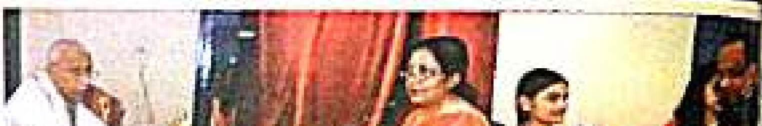

माननीय अतिथियों के हस्तोद्गार

सनातन भारतीय संस्कृति

डॉ. [illegible]

संस्कृति राष्ट्र और जाति की आत्मा है, आत्मिक उत्थान का [illegible] आत्मिक उत्कर्ष की सीढ़ी है, और आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग है। भारतीय [illegible] इस विशालता का [illegible] है- अनेक मत-मतान्तर [illegible] उपभोक्तावादी पाश्चात्य संस्कृति के विपरीत भारतीय [illegible] 'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति' अथवा 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' [illegible] ये सूत्र इसी तथ्य की पुष्टि करते हैं।

हमारी संस्कृति में पीपल, तुलसी जैसी वनस्पति, गंगा यमुना आदि नदियाँ, हिमालय जैसे पर्वत, [illegible] उनकी रक्षा का प्रयत्न व उनके प्रति गहन आस्था [illegible] प्रकृति के साथ सहयोग व सहअस्तित्व में विश्वास रखती है, [illegible] अतः भारतीय संस्कृति [illegible] विश्व की नाना संस्कृतियों का इतिहास साक्षी है [illegible] नील नदी की घाटी में [illegible] विश्व की संस्कृति [illegible] संस्कृतियाँ अब भूमि पर नहीं हैं। [illegible] देवताओं और [illegible] कोई महत्व नहीं रखती हैं किन्तु [illegible] संस्कृति का अमर वट वृक्ष प्रागैतिहासिक वैदिककाल से लेकर आज तक फल-फूल रहा है तथा [illegible] रूप में विद्यमान है।

इसी सन्दर्भ में [illegible] दार्शनिक विक्टर कजिन की धारणा है - ''जब हम पूर्व की ओर, [illegible] भारत की साहित्यिक एवं दार्शनिक कृतियों का अवलोकन करते हैं, तब हमें अनेक ऐसे [illegible] का पता चलता है जहाँ पहुँचकर यूरोपीय प्रतिभा कभी-कभी रुक गई है। हमें पूर्व के तत्वज्ञान के आगे [illegible] टेक देने पड़ते हैं।'' उर्दू के सुप्रसिद्ध कवि इकबाल ने कहा है- 'यूनान, मिस्र रोमा सब मिट गए जहाँ से, अब तक मगर है बाकी नामोनिशां हमारा'। वह कुछ बात क्या है जिसके कारण हमारी 'हस्ती' मिटती [illegible] कुछ गुण क्या हैं जिनके आगे यूरोप के दार्शनिक भी नतमस्तक हैं। ये विशेषताएँ कौन सी हैं, जिनसे [illegible] यजुर्वेद (7/14) का कथन आज भी सार्थक है। **'सा प्रथमा संस्कृति विश्ववारा'** अर्थात यह विश्व [illegible] वरण करने वाली सर्वप्रथम, श्रेष्ठ संस्कृति भारतीय संस्कृति है जो अपने गुणों से अमूल्य है। भारतीय [illegible] के अमरत्व के कारणों पर प्रकाश डालते हुए श्री ए.एल. [illegible] ने लिखा है-

'भारतीय संस्कृति बहुत पुरानी है, मगर जीवन्त है। लगातार जारी रहना और अपने को नए [illegible] परिभाषित करना, इसके दो मुख्य गुण हैं। ये दोनों गुण भारतीय संस्कृति को आज के [illegible] विश्व में प्रासंगिक बनाते हैं।'

[illegible]

[illegible] हिमालय की चोटी [illegible] है। [illegible] भारतीय संस्कृति [illegible] है।

आधुनिक संस्कृति प्राचीन हिन्दू और मुस्लिम संस्कृतियों तथा पाश्चात्य संस्कृति का [illegible] आज संस्कृति के अर्थ ही बदलते जा रहे हैं [illegible] सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह आदि [illegible] भारतीय संस्कृति जीवन्त है। [illegible] के उद्देश्य निर्धारित करने होंगे। [illegible] तभी समाज सत्यं, शिवं, सुन्दरम् की ओर [illegible] संस्कृति [illegible] साकार कर सकेगा।

आयुषः क्षण एकोऽपि सर्वरत्नैर्न लभ्यते।
नीयते स वृथा येन प्रमादः सुमहानहो॥

अर्थ :- सारे रत्न दे देने पर भी आयु का एक क्षण भी प्राप्त नहीं किया जा सकता, अतः जीवन में [illegible] व्यर्थ [illegible] महान असावधानी है।

सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदम्।
वृणते हि विमृश्यकारिणं गुणलुब्धाः स्वयमेव सम्पदः॥

अर्थ :- जल्दी में आकर कोई कार्य नहीं करना चाहिए क्योंकि विवेकशून्यता विपत्तियों का घर होती है। जो व्यक्ति सोच समझ कर कार्य करता है, गुणों से आकृष्ट होने वाली लक्ष्मी स्वयं ही उसका चुनाव कर लेती है।

नास्ति मातृसमा छाया, नास्ति मातृसमा गतिः।
नास्ति मातृसमं त्राणं, नास्ति मातृसमा प्रिया॥

अर्थ :- माता के समान कोई छाया नहीं है, माता के समान कोई सहारा नहीं है, माता के समान कोई रक्षक नहीं है और माता के समान कोई प्रिय नहीं है।

भारतीय संस्कृति में लक्ष्मी का स्वरूप : मृण्मूर्तियों के परिप्रेक्ष्य में

डॉ० [illegible]
असि० प्रोफेसर, [illegible]

[illegible]

लक्ष्मी मृण्मूर्तियाँ : [illegible] लक्ष्मी मृण्मूर्तियाँ, आदि है।

1. [illegible] विकसित कमल पर खड़ी हुई [illegible]
2. [illegible] श्री लक्ष्मी की मूर्ति।
3. [illegible]
4. [illegible]

श्री लक्ष्मी

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

०-०-०

[illegible]

डॉ० [illegible]

[illegible]

भारतीय कला-संस्कृति और धर्म में अन्तः संबंध

[illegible]

किसी भी देश की अपनी परंपरा, अपना इतिहास होता है और देश की संस्कृति [illegible] है। भारतीय कला संस्कृति और धर्म विश्व की सबसे पुरानी एवं समृद्ध संस्कृति मानी जाती है। [illegible] विश्व का एक अद्भुत एवं अनोखा राष्ट्र है। [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

अतः ऐतिहासिक दृष्टि से यह सत्य है कि कला का धर्म से निकट का संबंध रहा है। [illegible] कला का आत्यधिक महत्व है। [illegible]

❖❖❖

हिन्दी साहित्य में भारतीय संस्कृति के विविध रूप

[illegible]

भारतीय संस्कृति विश्व की सर्वाधिक प्राचीन एवं समृद्ध संस्कृति है। [illegible] किन्तु भारत की संस्कृति [illegible] अजर-अमर बनी हुई है। [illegible] अन्य संस्कृतियों को [illegible] भारतीय संस्कृति को पहले समझने का परामर्श देते हैं। [illegible] प्रमाणित होता है कि आज से लगभग पाँच हजार वर्ष पहले [illegible] एक उच्च कोटि की संस्कृति का विकास हो चुका था। [illegible] भारतीय संस्कृति न केवल प्राचीनता का प्रमाण है, अपितु [illegible] अभिव्यक्ति है। उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर [illegible] भारतीय संस्कृति से प्राचीन [illegible]

[illegible]

मिस्र, अमेरिका एवं बेबीलोनिया जैसी संस्कृतियों को इसके समकालीन माना जाता है। [illegible] जीवन को वैसा ही स्वीकार नहीं कर लेता जैसा प्रकृति ने इन्हें बनाया है इन्हें अपनी [illegible] आवश्यकताओं के अनुसार, अपनी शक्ति, साधना और योग्यता के अनुरूप परिष्कार करता है। [illegible] क्रिया को संस्कृति कहते हैं। 'संस्कृति' शब्द का प्रथम प्रयोग यजुर्वेद में मिलता है :

"अच्छिन्नस्य ते देव सोम सुवीर्यस्य
रायस्पोषस्य ददितार: स्याम। सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा।"

शतपथ ब्राह्मण में संस्कृत शब्द अग्नि के बाहु-विस्तार के लिए आया है। यहाँ निष्कर्ष है [illegible] आदि का प्रयोग होता है वे संस्कृत हैं, क्योंकि उनमें अग्नि के [illegible] वृद्धि होती है। संस्कृति में वह शामिल है जो मानव ने अपने व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन [illegible] और आध्यात्मिक क्षेत्र में आज तक अर्जित किया है। संस्कृति के रूप में प्रत्येक देश का [illegible] विवेक होता है जो प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद देश को स्थिर रखता है। संस्कृति [illegible] आत्मचेतना का नाम है जो उसके जीवन को परिष्कृत करता है।

भारत के मध्य प्रदेश एवं अन्तर्वेद में शौरसेनी अपभ्रंश हिन्दी भाषा का विकास हुआ है। [illegible] लगभग 1000 ई० के आस-पास भली प्रकार से मिलने लगता है। ईसा की दसवीं शताब्दी [illegible] साहित्य के दर्शन होने लगते हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने हिन्दी साहित्य के इतिहास को [illegible] विभाजन किया है जो इस प्रकार है- आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल और आधुनिक काल।

व्यक्ति और समाज का घनिष्ठ सम्बन्ध है। इसी का दूसरा रूप मानव व मानवता का सम्बन्ध [illegible] रखती है पर उसके विकास में भी लगा रहता है। मानव अपने जीवन का उत्सर्ग परिवार के [illegible] करता है। परिवार समाज की भलाई के लिए, समाज जाति की भलाई के लिए, जाति देश की भलाई [illegible] तथा देश विश्व की भलाई के लिए, विश्व मानवता की भलाई के उत्सर्ग करता है। मानवीय [illegible] आधार है करुणा और मैत्री। हिन्दी साहित्य का इतिहास आदिकाल से ही मानवता का '[illegible] आदिकाल साहित्य जनजीवन की अनुभूतियों से अनुप्राणित है।

कबीर की दृष्टि से पंडित वही है जिसने प्रेम के दो अक्षर पढ़ लिए हैं। संत काव्य का प्रेम [illegible] सम्भव भाव लिए हुए है। रामचरित मानस में व्यष्टि और समष्टि का संतुलन दिखाया गया है। [illegible] दृष्टिकोण के उन्नायक थे। सूफी साधना में भी गुरु का महत्वपूर्ण स्थान है। मुस्लिम कवियों में [illegible] सूफी मतानुयायी थे। छायावादी काव्य व्यक्तिनिष्ठ और कल्पना प्रधान काव्य है। यह अनुभूति [illegible] मानव मात्र की एकता को स्थापित करने में समर्थ है। महादेवी ने सर्ववादी दर्शन को अपनाया है [illegible] कल्याण की भावना निहित है। प्रगतिवाद वर्तमान जनजीवन में सौन्दर्य खोजता है, प्रयोगवादी [illegible] सम्पूर्ण मध्यवर्गीय समाज का चित्रण है और नई कविता जीवन के प्रत्येक क्षण को सत्य मानती [illegible] की कविता में एक ओर व्यक्तिगत पीड़ा का अंकन है तो दूसरी ओर विषमता के प्रति विद्रोह [illegible] आक्रोश भी है। इस प्रकार हिन्दी साहित्य पर आदि से अंत तक एक विहंगम दृष्टि डालने पर [illegible] भारतीय संस्कृति अपने विविध रूपों में परिलक्षित होती है।

आर्थिक विकास नीति और संस्कृति

कु० श्रुति [illegible]
बी०ए०- तृतीय वर्ष

संस्कृति का शब्दार्थ है- उत्तम या सुधरी हुई स्थिति। मनुष्य स्वभावतः प्रगतिशील प्राणी है। यह बुद्धि के प्रयोग से अपने चारों ओर की प्राकृतिक परिस्थिति को निरन्तर सुधारता और उन्नत करता है। ऐसी प्रत्येक जीवन-पद्धति, रीति-रिवाज, रहन-सहन, आचार-विचार नवीन अनुसन्धान और आविष्कार, जिससे मनुष्य पशुओं की दशा से ऊँचा उठता है तथा सभ्य बनता है, सभ्यता संस्कृति का अंग है। सभ्यता से मनुष्य के भौतिक क्षेत्र की प्रगति सूचित होती है। मनुष्य केवल भौतिक परिस्थितियों में सुधार करके ही सन्तुष्ट नहीं हो जाता। वह भोजन से ही नहीं जीता, शरीर के साथ मन और आत्मा भी है। भौतिक उन्नति से शरीर की भूख मिट सकती है, किन्तु इसके बावजूद मन और आत्मा तो अतृप्त ही बने रहते हैं। इन्हें सन्तुष्ट करने के लिए मनुष्य अपना जो विकास और उन्नति करता है, उसे संस्कृति कहते हैं।

मनुष्य की जिज्ञासा का परिणाम धर्म और दर्शन होते हैं। सौन्दर्य की खोज करते हुए वह संगीत, साहित्य, मूर्ति, चित्र और वास्तु आदि अनेक कलाओं को उन्नत करता है। सुखपूर्वक निवास के लिए सामाजिक और राजनीतिक संगठनों का निर्माण करता है। इस प्रकार मानसिक क्षेत्र में उन्नति की सूचक उसकी प्रत्येक सम्यक् कृति संस्कृति का अंग बनती है। इनमें प्रधान रूप से धर्म, दर्शन सभी ज्ञान-विज्ञानों और कलाओं, सामाजिक तथा राजनीतिक संस्थाओं और प्रथाओं का समावेश होता है। सत्य, शिव और सुन्दर ये शाश्वत मूल्य हैं जो संस्कृति से निकट से जुड़े हैं। यह संस्कृति ही है जो हमें दर्शन और धर्म के माध्यम से सत्य के निकट लाती है। यह हमारे जीवन में कलाओं के माध्यम से सौन्दर्य प्रदान करती है और सौन्दर्य अनुभूतिपूर्ण मानव बनाती है यह संस्कृति ही है जो हमें नैतिक मानव बनाती है और दूसरे मानवों के निकट सम्पर्क में लाती है और इसी के साथ प्रेम, सहिष्णुता और शान्ति का पाठ पढ़ाती है।

व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के जीवन में संस्कृति का महत्व तो निर्विवाद है ही पर सुखद जीवन-यापन के लिए आर्थिक पक्ष की भी उपेक्षा नहीं की जा सकती। विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों और सभ्यताओं का विकास उन्हीं क्षेत्रों में हुआ, जहाँ की भूमि और जलवायु ऐसी थी कि थोड़े प्रयत्न से जीवन-यापन के लिए पर्याप्त धन-धान्य पैदा किया जा सकता था। विशेष रूप से सिंधु और गंगा की घाटियां ऐसे उपयुक्त क्षेत्र थे, जिनमें हिन्दू संस्कृति और सभ्यता का विकास हुआ, जो न केवल सारे भारत पर छा गई अपितु जिसका प्रभाव भारत के बाहर भी दूर-दूर तक फैला।

रोटी कमाना और पेट भरना व्यक्ति की प्रथम आवश्यकता होती है यह आवश्यकता पूरी हो जाती है, तब उसका मन और उसकी बुद्धि सृजनात्मक, कलात्मक कामों और चिन्तन की ओर प्रवृत्त होती है और सभ्यता और संस्कृति का विकास होता है। सादगी पूर्ण रहन-सहन, अपरिग्रह, दानशीलता, प्राणि मात्र को अपने ही समान मानना, ईमानदारी आदि अनेक बातें अधिकांश देशों के सांस्कृतिक मूल्यों में समाहित है। इनको अपनाकर जहाँ व्यक्ति एक नैतिक उच्चता प्राप्त कर सकता है वहीं गरीबी, असमानता, अपराध आदि अनेक सामाजिक-आर्थिक समस्याओं का भी समाधान प्राप्त हो सकता है। अतः कहा जा सकता है कि सांस्कृतिक मूल्यों और आर्थिक विकास नीति में परस्पर तालमेल से ही मानव समाज बेहतर परिणाम प्राप्त कर प्रगति कर सकता है।

समन्वयवादी भारतीय संस्कृति

भारत अत्यंत समृद्ध और विविधतापूर्ण सांस्कृतिक परंपराओं का देश है। भारतीय संस्कृति के [illegible] धार्मिक संस्कार, मान्यताएँ और मूल्य आदि हैं। [illegible] भारतीय आज भी अपनी परंपरा और मूल्यों का [illegible] ने एक अनोखा देश 'भारत' बनाया है। [illegible] प्राचीन संस्कृति है जो लगभग पाँच हजार वर्ष पुरानी है। [illegible] भारतीय संस्कृति को माना जाता है। 'विविधता में एकता' इस संस्कृति की [illegible] अपनी-अपनी संस्कृति और परंपरा का पालन करते हैं। [illegible] धार्मिक समुदाय में जन्म लेने वाले लोग एक साथ [illegible] हो जाते हैं।

भारत एक ऐसा देश है जहाँ देश के अलग-अलग हिस्सों में भिन्न-भिन्न भाषाएँ बोली [illegible] सामाजिक मान्यताओं, प्रथा आदि से भिन्न होते हैं। भारत की [illegible] लोगों की जीवन शैली, मान्यताएँ, रीति-रिवाज, मूल्य, आदतें [illegible] यहाँ की संस्कृति में सभी चीजों की झलक देख सकते हैं। जैसे- [illegible] भोजन आदि जो कि अलग-अलग संस्कृतियों को [illegible] अच्छा व्यवहार करना, बड़ों की इज्जत करना, [illegible] ये हमारी धार्मिक संस्कृति है कि हम [illegible] परिवार के बड़े सदस्यों के पैर छुएं, रोज ध्यान और [illegible] की परंपरा का पालन कर हम बहुत खुशी [illegible] भारतीय संस्कृति का मूल [illegible] और आध्यात्म है। [illegible] किंतु मानवीय मूल्यों के आधार [illegible] इसके प्रकाश में मनुष्य परस्पर प्रेम के [illegible] इस प्रकार भारतीय संस्कृति एक ऐसी विराट संस्कृति है [illegible] प्रकाशित करती है। मनुष्य सृष्टि के स्थूल पदार्थों जैसे-पंचतत्व, [illegible] पाप-पुण्य, धर्म-कर्म, जीव आत्मा-परमात्मा आदि [illegible] और आध्यात्मिक [illegible] को सामाजिक जीवन के उपयुक्त बनाने [illegible] ''संस्कृति'' का नाम दिया है।

भारत देश की संस्कृति सबसे पुरानी संस्कृति मानी जाती है। हम यह भी कह सकते हैं कि [illegible] श्रेष्ठ भी है। क्योंकि संसार की अन्य संस्कृतियों में आध्यात्मिक [illegible] भारतीय संस्कृति का मुख्य लक्ष्य आध्यात्मिक उन्नति ही है। आज [illegible] परन्तु भारत की प्राचीन सभ्यता और संस्कृति [illegible] के बाद भी कायम है। भारत का धर्म आज भी वैदिक है, [illegible] इस देश में बह रही है। [illegible] हमारी संस्कृति की यह विशेषता रही है कि [illegible] एक साथ आश्रय मिला है।

हमारी संस्कृति में समन्वय की विशेष स्थिति है। अतीत, वर्तमान, और भविष्य [illegible] भारतीय संस्कृति है। भारतीय धर्मों में हिंदू व बौद्ध धर्मों का [illegible] संस्कृति, कला, ज्ञान-विज्ञान आदि को बहुत प्रभावित किया है। [illegible] देशों में बौद्ध धर्म का व्यापक प्रचार-प्रसार है। भारतीय संस्कृति का [illegible] के साहित्य को भी प्रभावित किया तथा [illegible] का प्रभाव [illegible] भाषाओं में भारतीय धर्म, दर्शन एवं [illegible] अनेक स्थानों पर भारतीय साहित्य का [illegible] भारतीय संस्कृति ने विश्व को विशेष रूप से प्रभावित किया है। [illegible] वैदिक संस्कृति के बहुमुखी व्यापक तथा शाश्वत प्रभाव को [illegible] विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। [illegible] वैदिक संस्कृति की संस्कार [illegible] करने की क्षमता है। संस्कार परंपरा द्वारा व्यक्ति को [illegible] अभी भी विद्यमान है। भारतीय [illegible] व्यापक प्रसार किया है। अपने समन्वयवादी गुणों के कारण ही भारतीय संस्कृति की गणना [illegible] संस्कृति के रूप में होती है।

❖❖❖

[illegible] ले जाना चाहते हैं जहाँ न वेद है, न बाइबिल, न कुरान। [illegible] जो कि एकत्व है, [illegible] हमारी जन्मभूमि का कल्याण तो इसमें है कि इसके दो धर्म, हिन्दुत्व और इस्लाम [illegible] भारत की आशा है।

— स्वामी विवेकानंद

[illegible] कि हमारी जाति कहाँ बुद्ध, [illegible] हमारी जड़ें उखाड़ [illegible] और जिसके कारण दुनिया में हमारी [illegible] भारत, भारत न रहेगा।

— जवाहरलाल नेहरू

हिन्दू संस्कृति की आधारशिला [illegible] है। हिन्दू संस्कृति, भारतीय संस्कृति है और भारतीय संस्कृति संपूर्ण-जगत की संस्कृति है।

— [illegible]

साहित्य कला में काव्य सौन्दर्य

[illegible]

[illegible] सौन्दर्य [illegible] है। मनुष्य को जिन कृतियों में सौन्दर्य की [illegible] संगीत आदि इसके उदाहरण है। [illegible] कला सौन्दर्य की सृष्टि अथवा माध्यम है। [illegible] के द्वारा मनुष्य इस सृष्टि के [illegible] की रचना है। वेदों और उपनिषदों में [illegible] है। सृष्टि के सौन्दर्य पर मनुष्य मुग्ध होता है [illegible] है। मनुष्य की रचना [illegible] वह प्रकृति के द्वारा प्रदत्त तत्वों को मिश्रित कर [illegible] है। साहित्य भी एक कला है जो [illegible] सौन्दर्य की सृष्टि करता है।

[illegible] आदि साहित्य की विविध विधाएँ हैं। साहित्य की इन विधाओं [illegible] फिर भी काव्य साहित्य की केवल एक विधा है किन्तु [illegible] माना जाता है। आचार्य [illegible] दूसरी ओर हिन्दी विद्वानों ने रस को ही [illegible] की प्रतिष्ठा करते हुए कहा- [illegible] हृदय की अवस्था रस दशा कहलाती है [illegible] एवं कलात्मक सौन्दर्य [illegible] उत्पत्ति एवं विकास से है। [illegible] सौन्दर्य की व्याख्या करता है। उसका [illegible] आकुल-व्याकुल बना रहता है। जीवन एवं जगत के अनुभव [illegible] उसकी [illegible] जैसे राम और कृष्ण की कथाएँ हर युग में [illegible] नवीनता और मौलिकता आती गई है, अतः कवि [illegible] के लिए [illegible] का बलिदान करना जरूरी है। [illegible] जो जीवन की युग-युगान्तर [illegible] यात्रा में [illegible] के अनुसार - "मानव के जितने सृजन हैं [illegible] सृजन है।" [illegible] काव्य की आत्मा की संकल्पात्मक अनुभूति [illegible] है।

काव्य की [illegible] विवेचना एवं [illegible] में जो बात सामने आया है वह यही है कि कविता में दो [illegible]

अनुभूति का और दूसरा अभिव्यक्ति का। कविता की अनुभूति [illegible] सौन्दर्य [illegible] फिर भी काव्य की आत्मा रस है क्योंकि [illegible] अनुभूति [illegible] अनुभूतियों का काव्य [illegible] और अनुभूति से [illegible] शब्द, अर्थ, [illegible] विचार या [illegible] अलंकारों में उसी प्रकार [illegible] के पुष्पों में खिलता है। जिस प्रकार [illegible] से ही प्रकट होता है। [illegible] आचार्य ने अलंकार को काव्य का आवश्यक [illegible] है।

[illegible] काव्य [illegible] जीवन और जगत के [illegible] है। कवि जिस सत्य को अपनी अनुभूति में [illegible] सत्य को [illegible] का कथन "कविता हमको [illegible] है।" [illegible] सुमन सुन्दर, मानव तुम सबसे सुन्दरतम" में [illegible] है और [illegible] सौन्दर्य का अनुपम उदाहरण है।

❖ ❖ ❖

मेरा उद्देश्य

[illegible], बी.ए. प्रथम वर्ष

[illegible] हूँ मैं कुछ,
[illegible] जीवन।
[illegible] हूँ मैं कहीं,
[illegible] सपनों में।
[illegible] हूँ मैं कुछ [illegible],
[illegible] माँ-बाप का नाम।
है मेरी जिन्दगी का एकमात्र उद्देश्य,
[illegible] माँ-बाप के सपने।
[illegible] केवल एक ही है मन में,
[illegible]?
[illegible] की [illegible] होगा।
सपनों में नहीं, हकीकत में
[illegible] कर दिखाना होगा।
[illegible], माँ-बाप के सपनों को
[illegible] दिखाना होगा।
[illegible] मेहनत, पक्के इरादों से
[illegible] पर खरा उतरना होगा।।

हम ऐसा कुछ करना सीखें

[illegible]
[illegible]

[illegible] हमें देता है सब कुछ, हम भी तो कुछ देना सीखें।
सूरज हमें [illegible], हम नया जीवन [illegible] है।
[illegible] को हम [illegible] पर [illegible] है।
[illegible] हम ऐसा कुछ करना सीखें।।
[illegible] हमें देता है सब कुछ, हम भी तो कुछ देना सीखें।।

[illegible] की [illegible] पेड़ [illegible] है [illegible]।
सुमन सुगन्ध [illegible] हैं, हम [illegible] फूलों [illegible]।।
[illegible] के जीवन [illegible], हम [illegible] कुछ करना सीखें।
[illegible] हमें देता है सब कुछ, हम भी तो कुछ देना सीखें।।

जो अनपढ़ हैं उन्हें पढ़ाएं, जो [illegible] है [illegible] हैं,
जो पिछड़े हैं उन्हें बढ़ाएं, [illegible] धरती [illegible] है।।
हम मेहनत के [illegible], [illegible] करना सीखें।
[illegible] हमें देता है सब कुछ, हम भी तो कुछ देना सीखें।।

कला, संस्कृति एवं विज्ञान का अन्तः संबंध

श्री.एस. [illegible]

कला, संस्कृति तथा विज्ञान के अन्तः संबंध को प्रतिपादित करने के लिए [illegible] इनके अर्थ का विश्लेषण करना होगा। [illegible] ज्ञान देने वाला [illegible] आधुनिक विज्ञान को देखते हुए कवियों और विद्वानों ने भी कहा है-

"विज्ञान की छड़ी जहाँ तक जाती है, बुद्धि [illegible] वहीं तक जाती है, इन मशीनों को लाख समझाओ, ये आत्मा को नहीं पहचानती है।"

कला शब्द का अर्थ अत्यंत व्यापक है। अनेक विद्वानों ने कला की अनेकों परिभाषा दी है। [illegible] के अनुसार, "अभिव्यक्ति की कुशल शक्ति ही तो कला है।" रवीन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार, "मनुष्य के विचारों की अभिव्यक्ति ही तो कला है।" और हमारे [illegible] भी कहते हैं कि 'साहित्य, संगीत कला विहीन, साक्षात पशु पुच्छ, विषाणहीन।'

इसी प्रकार संस्कृति की व्यापक परिधि में मनुष्य का रहन-सहन, आचार-विचार, खान-पान [illegible] हो जाता है।

विज्ञान कला और संस्कृति में घनिष्ठ सम्बन्ध है और इनके समावेश के बिना आधुनिक जीवन [illegible] नहीं है क्योंकि [illegible] जीवन एक कला है तो संस्कृति उसका आधार है। एक संतुलित और [illegible] के लिए दोनों का साथ और संतुलन चाहिये। साहित्यकार भूषण जी कहते हैं-

"यदि संस्कृति, कला और विज्ञान तीन चरण मानें, जिनमें विज्ञान प्रथम चरण है जो एक तर्क है [illegible] तो संस्कृति दूसरा चरण है और जब संस्कृति सघन हो जाती है तो वर्षा होती है इसी को कला कहते हैं। जीवन जीने की कला ही विज्ञान है लेकिन जिस प्रकार वैज्ञानिक की खोज या सिद्धान्त [illegible] जाता है जब उसके समकक्ष वैज्ञानिक भी उसे स्वीकार कर लें। उसी प्रकार विज्ञान कला और संस्कृति [illegible] सम्बन्ध भी तभी स्वीकार होगा जब हम कला और संस्कृति के क्षेत्र में विज्ञान की देन याद रखें।

निष्कर्ष रूप में सत्य की अनुकृति को ही कला कहा गया है। प्लूटो के अनुसार विज्ञान का [illegible] "विशिष्ट ज्ञान" अर्थात् जब मनुष्य में ज्ञान होगा तभी तो वह रचना करेगा और वही रचना [illegible] होगी।

इस प्रकार कला ही ज्ञान है और ज्ञान ही विज्ञान है। विज्ञान के सभी अविष्कारों ने विश्व [illegible] संस्कृति के विकास में योगदान दिया है। अतः कला, संस्कृति एवं विज्ञान परस्पर संबंद्ध व एक दूसरे के पूरक है।

हमारी संस्कृति के पहरेदार कौन .... ?

डॉ. [illegible]
[illegible]

हमारे देश की संस्कृति विश्व की विभिन्न संस्कृतियों में प्राचीन और वैभवशाली रही है। [illegible] जैसे-जैसे मानव जीवन का विकास हुआ [illegible] यहाँ तक कि हमारी भाषा एवं साहित्य, [illegible] और आज हम जब संस्कृति की बात करते हैं तो [illegible] है।

संस्कृति के इन तत्त्वों को [illegible] से प्राप्त प्राचीन [illegible], मूर्तियों, सिक्कों, [illegible] लोक गीतों व लोक कथाओं में खोजा जा सकता है। [illegible] यदि हम इनका सुव्यवस्थित अध्ययन करें तो हमारी संस्कृति का एक [illegible] सकता है। यद्यपि हमारी इस विरासत और [illegible] संस्कृति का [illegible] एवं आक्रमण [illegible] रहे, तथापि यह एक [illegible] कोई पूर्णतया विनाश कर सका। [illegible] और [illegible] जिनके द्वारा अपनी संस्कृति [illegible] भी कह सकते हैं।

संस्कृति के इन पहरेदारों में सर्वप्रथम ऐसे प्राचीन और स्थायी [illegible] का [illegible] संस्कृति को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाया, जैसे [illegible] देवी-देवताओं की मूर्तियाँ एवं [illegible] इन्हें कोई गहन क्षति नहीं पहुँची। [illegible] इसके [illegible] के अनेक सामर्थ्यशाली [illegible] के विध्वंस भी किए। [illegible] ही हमारी संस्कृति के मौन एवं सशक्त पहरेदार हैं। [illegible] अनुपम [illegible] और हमें संस्कृति के प्रारंभिक स्वरूप का बोध कराने के साथ-साथ [illegible] प्रेरणा और आदर्श देती रही। वस्तुतः ये धरोहरें ही हमारी संस्कृति की प्रमुख रक्षक हैं।

हमारी संस्कृति के मुख्य संवाहक उन कलाकारों को हम दूसरे वर्ग में ले सकते हैं जिन्होंने [illegible] का निर्माण करते हुए संस्कृति का क्रमिक विकास किया। इन्होंने [illegible] संस्कृति के [illegible] उनसे पहले वाली पीढ़ी के कलाकार छोड़ गये थे। [illegible] अपनी संस्कृति को [illegible] बनाये रखने में इन कलाकारों का महत्वपूर्ण योगदान है।

हमारी संस्कृति के तीसरे पहरेदार ऐसे [illegible] प्रयत्न एवं कारक हैं जो [illegible] में अनेक कला प्रेमियों और संस्कृति के पक्षधरों द्वारा [illegible] कला-[illegible], अज्ञात शिल्पकारों तथा विनष्ट हो रही बहुमूल्य कला धरोहरों को [illegible] किया। यदि हमारे विद्वानों का ध्यान इस ओर नहीं गया होता, तो आज हम विश्व के समक्ष [illegible] सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत पिछड़ा हुआ पाते। आधुनिक युग में प्रचलित एवं विकसित [illegible] विभिन्न वैज्ञानिक एवं रासायनिक विधियों ने भी हमारी संस्कृति के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

अतीत का पुनर्लेखन करता एवं भविष्य को गढ़ता होमोसेपियन्स

[illegible]

है तब भी बीच-बीच में उसका मस्तिष्क अतीत को याद करते हुए आगे की कल्पना करता है।

मनुष्य ने हर चीज को देखा, सोचा और अपना भविष्य तय किया और ज्ञान को आधार बनाकर [illegible] आगे की ओर देखता है।

संस्कृति की अविरल धारा में भारतीयता की तलाश

[illegible]

[illegible]

गाँधी-विचारधारा : तत्वानुशीलन

डॉ० अन्नु शर्मा
प्रवक्ता, हिन्दी

[illegible] 'गाँधीवाद' है। गाँधी विचारधारा से तात्पर्य उन सभी सिद्धान्तों से है, [illegible] महात्मा गाँधी ने [illegible] ''गाँधीवाद सत्य की साधना का विज्ञान है। उसकी समस्त प्रवृत्तियाँ [illegible] सर्वव्यापक है। [illegible]''

[illegible]

[illegible] 'सत्य के प्रयोग' से परिपूर्ण है। [illegible] ''सत्य में सब बातों का समावेश हो जाता है। [illegible]''

[illegible] सत्य और अहिंसा का [illegible] महाभारत की [illegible] अहिंसा का सन्देश सुनाते हैं-

''अहिंसा परमोधर्मः अहिंसा परमं तपः।
अहिंसा परमं सत्यं ततो धर्म प्रवर्तते।।''

[illegible] ''अहिंसा सिर्फ एक व्यक्तिगत गुण नहीं है बल्कि एक सामाजिक गुण भी है, जिसे दूसरे गुणों की तरह विकसित करना चाहिए।''

गाँधी जी साम्प्रदायिक एकता के पक्षधर थे। साम्प्रदायिक एकता का अर्थ स्पष्ट करते हुए वह कहते हैं कि, [illegible] हिन्दू, मुसलमान, ईसाई आदि [illegible] दूसरे धर्मों के प्रति इतना ही आदर रखना चाहिये जितना की अपने धर्म के प्रति।'' [illegible] मैथिलीशरण गुप्त [illegible]-

''[illegible]
हिन्दू मुसलमान दोनों का, एक संयुक्त राष्ट्र होगा।।''

[illegible] जी का मानना था कि हिन्दू और मुसलमान दोनों एक ही ईश्वर को मानते हैं अतः [illegible] मिलजुलकर रहना चाहिए।

"[illegible] हिन्दू मुस्लिम, एक ही [illegible] के दो [illegible]।
एक ही [illegible] के दो हम, एक ही जननी के दो [illegible]।।"

[illegible] जी का मानना था कि अस्पृश्यता हिन्दू धर्म में [illegible] और [illegible] जाता है। [illegible] प्रत्येक हिन्दू का धर्म है [illegible] कि ईश्वर एक है। वह प्रकाश है [illegible] [illegible] के समान जैसे उन्होंने अपने [illegible] का [illegible] [illegible] सभी धर्मों के लोगों का [illegible] चाहिए। [illegible] का कथन है-

"[illegible] धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान।।"

[illegible] विचारधारा में [illegible] का विशेष दृष्टिकोण दीख है। उनका मानना था कि [illegible] [illegible] [illegible] के साथ ले एकता हो जाती है और [illegible] कहती है-

"आओ एक [illegible] करें, एक साथ [illegible] किये थे।
[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]।।"

[illegible] कह सकते है कि [illegible] विचारधारा चिन्तन की [illegible] उपलब्धि है। [illegible] [illegible] के द्वारा [illegible] चिन्तन पुष्ट और समृद्ध हुआ है। जिसके [illegible] [illegible] [illegible] समाज [illegible], राष्ट्र [illegible] [illegible] हुआ है। [illegible] आजादी की [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] करते हुए कहते है-

"[illegible] के दीवाने, बलिदान [illegible] लाये थे।
[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] लाये थे।।"

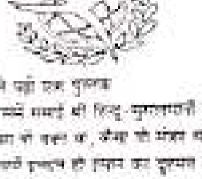

मैंने पढ़ी एक पुस्तक

मैंने पढ़ी एक पुस्तक
जिसमें [illegible] थी हिन्दू-मुसलमानों की [illegible]।
[illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible],
[illegible] [illegible] ही [illegible] का [illegible] था।।
हिन्दुओं ने [illegible] [illegible] [illegible]
मुसलमानों ने [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] आपस में [illegible] – [illegible]
[illegible] हो गए दोनों [illegible]।

[illegible] होंगे दो चार हिन्दू [illegible]
होंगे दो चार ही मुसलमान [illegible]
पर बँट गई दोनों की [illegible],
मजहब के आगे हारी इंसानियत
[illegible] की यह कहानी थी,
जिसे पढ़कर 'लज्जा' आयी थी।।
[illegible] [illegible] [illegible] था कि
मजहबी कट्टरता के आगे
इन्सानियत ने शिकस्त पाई थी

नोट – [illegible] की प्रसिद्ध पुस्तक 'लज्जा' पढ़ने के बाद मेरी अभिव्यक्ति

राष्ट्रीय नीति में पारदर्शिता: भ्रष्टाचार पर प्रहार

[illegible] [illegible], [illegible]
[illegible] [illegible], [illegible] [illegible], [illegible] [illegible]

"आज [illegible] का युग [illegible], [illegible] [illegible] है, [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] हुआ है, [illegible] है [illegible],
[illegible], [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] है,
[illegible] है [illegible] [illegible], [illegible] का [illegible] है।।"

[illegible] की उन्नति का एक ही मूलमंत्र है, [illegible] [illegible] [illegible] होते है, [illegible] होगा, [illegible] का जीवन जितना विकसित होगा, [illegible] [illegible] होगा, राष्ट्र का उतना ही उत्थान होगा, [illegible] [illegible], और [illegible] [illegible]। यह सर्वविदित है, कि आज हर क्षेत्र में भ्रष्टाचार [illegible] [illegible] हुए है। [illegible] बात है कि आजादी के [illegible] वर्ष बाद भी भारत विश्व के [illegible] [illegible] में है। 'ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल' [illegible] की एक नई रिपोर्ट के मुताबिक भारत भ्रष्टाचार के मामले में [illegible] देशों की सूची में [illegible] है। प्रशासनिक शिथिलता भ्रष्टाचार की जड़ है। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। भारतीय प्रशासन [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है। '[illegible] राजनीतिज्ञों के दबाव से [illegible] [illegible] [illegible], अनेक [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], और [illegible] में कमजोर वैधानिक व्यवस्था।'

[illegible] ने कहा था- "सरकारी धन का दुरुपयोग न करना उसी तरह [illegible] है जैसे [illegible] [illegible] [illegible] न चखना।" [illegible] में [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] प्रशासनिक [illegible] [illegible] होता है, लेकिन [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है, जिसका दुष्परिणाम यह हो रहा है कि प्रशासन में [illegible] अधिकारियों की [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है। [illegible] [illegible] ही [illegible] [illegible] तो [illegible] [illegible] प्रशासनिक [illegible] [illegible] कैसे और [illegible] करें? [illegible] हम भ्रष्टाचार की [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है [illegible] है [illegible] के [illegible] [illegible]।

[illegible] और [illegible] में [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के लिए [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] राष्ट्रपति के [illegible] भी [illegible] [illegible] [illegible] हो सकता है, तो [illegible] देश में यह [illegible] क्यों नहीं लागू की जा सकती ? जन प्रशासन में पारदर्शिता [illegible] हो। जनता को कब, क्यों, कैसे आदि प्रश्नों का [illegible] मिलेगा, और राष्ट्रीय योजनाओं का लाभ गरीब एवं असहाय जनता को अवश्य मिलेगा। इस दिशा में [illegible] अधिनियम एवं कार्यक्रम है जैसे – [illegible] 2005 [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible], सूचना का अधिकार अधिनियम 2005, लोकसेवकों की जवाबदेही, राष्ट्रीय [illegible] आयोग, [illegible] [illegible] [illegible], 1923 में संशोधन, केन्द्रीय सतर्कता आयोग 1998, केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो 1963, प्रशासनिक सुधार आयोग 1966, [illegible] चार्टर 1988, शक्तियों का विकेन्द्रीकरण और [illegible] ही में सरकार द्वारा ई-[illegible] के

... पर अधिकतम नियंत्रण लगाएंगे। यदि इन आयोगों व अधिनियमों का प्रयोग ईमानदारी से [illegible] प्रशासन में पारदर्शिता आएगी व भ्रष्टाचार काफी सीमा तक खत्म होगा।

[illegible] भ्रष्टाचार निरोधक कानून तो 1957 में ही पारित हो गया था, लेकिन [illegible] उससे भी बुरी दशा उन अनुदानों की है [illegible] किस राज्य में कितना घपला हुआ है, उसका अनुमान [illegible] कि पंचायत में एक लाख [illegible] नौकरी नहीं मिली ? उनके लाइसेंस, [illegible] भारतीय संविधान के अनुच्छेद 19 (1) 'a' में [illegible] मौलिक अधिकार है। यह प्रकरण कई बार न्यायपालिका के [illegible] सूचना प्राप्ति के अधिकार पर ही निर्भर करती है [illegible] प्रशासन में [illegible] सबसे बड़ी बाधा शासकीय गुप्त अधिनियम, 1923 है। [illegible] लोकपाल की जरूरत तो बताई जाती रही है लेकिन [illegible] यह थी कि नौकरशाह तथा राजनेता [illegible] आन्दोलन की सफलता का [illegible] यह है- [illegible] सिटिजन चार्टर लागू [illegible] न्यायिक आयोग होना चाहिए, जिसके जरिए न्यायिक [illegible]

अतः लोकपाल बिल व अन्य आयोगों व अधिनियमों के अन्तर्गत निर्धारित प्रावधानों [illegible] भ्रष्टाचार उन्मूलन हेतु प्रभावी है और इनमें जो कमियाँ हैं तो उनमें सर्वसहमति से [illegible] प्रभावी बनाया जा सकता है और प्रशासन में पारदर्शिता लाकर भ्रष्टाचार में [illegible] सकती है।

धर्म एव हतो-हन्ति, धर्मो रक्षति रक्षितः।
तस्माद् धर्मो न हन्तव्यः, मानो धर्मो हतोऽवधीत्।।

अर्थ — जो धर्म का नाश करता है, धर्म उसका नाश करता है। धर्म की रक्षा करने वाले की धर्म रक्षा करता है। अतः धर्म की हानि नहीं करनी चाहिए, धर्म की हानि करने वाले का नाश अवश्य होता है।

विश्व शांति और गाँधी दर्शन

कु० अनिता [illegible]
बी.ए. , तृतीय वर्ष

I had an atlas in my lap
I ran my fingers with soft taps
across the whole world and whispered
Where does it hurt ? It answered-
every where, every where, every where

विश्व शांति की मायने उन लोगों से पूछिये जिनका अस्तित्व [illegible] है, उन बच्चों से पूछिये जिनके हाथों से कलम छूट गयी, जो आज आत्मरक्षा हेतु हथियार थामे हैं, उस समाज से पूछिये जिसने न जाने कितने अपनों को खोया है, अपना घर, अपना [illegible] खोया है। उन [illegible] से जिनका [illegible] पैदा होते हैं या उन [illegible] से जिनका [illegible] हुआ हो।

गाँधीवाद- एक आदर्शवादी दर्शन। एक ऐसी विचारधारा जिसकी नींव सत्य, अहिंसा, धर्म, [illegible] पर टिकी है, जो असहयोग, सविनय अवज्ञा व अनशन के सिद्धान्तों का [illegible] है [illegible] भारतीय मूल्यों को ऐसी अभिव्यक्ति जो स्वयं में समस्त आदर्शों को समाहित किये हुए है। [illegible] समस्याओं का समाधान शान्तिपूर्वक किया जाना चाहिए। [illegible] सद्भाव व सहिष्णुता से [illegible] सत्य का [illegible] चाहिए [illegible] जीत हमेशा सत्य की होती है। उनका मानना था कि यदि कोई [illegible] उसी की भाषा में देने के बजाय उसे प्रेम पूर्वक [illegible] चाहिए। फिर भी यदि विरोध [illegible] विरोध शस्त्रों के द्वारा नहीं अपितु हड़ताल, अनशन, असहयोग, सामाजिक बहिष्कार आदि के माध्यम से करना चाहिए।

जब जवाहरलाल नेहरू ने विश्व के सामने पंचशील का सिद्धान्त रखा तो यह एक गाँधीवादी सोच थी, जब इन्दिरा गाँधी ने शिमला समझौता किया यह एक गाँधीवादी सोच थी। [illegible] गाँधीवादी सोच थी, [illegible] शपथ ग्रहण समारोह में बुलाना गाँधीवादी [illegible] परन्तु बदले में हमें क्या मिला ? कारगिल युद्ध, मुम्बई आतंकी हमला, पठानकोट एयरबेस पर हमला, उरी हमला, लगातार [illegible] गोलीबारी और फिर पाकिस्तान की कश्मीर मुद्दे पर गंदी सियासत। क्या कोई भूल सकता है उन [illegible] लाशों का मंजर जो मुंबई की जमीन ने देखा था, वे [illegible] जले हुए [illegible] पठानकोट के शहीद .... ? नहीं, कोई नहीं भूल सकता।

विश्व शान्ति की जब हम बात करते हैं तो स्वभावतः हमारे सामने वे समस्याएँ आ जाती हैं जिनसे आज न केवल विकसित देश अपितु विकासशील देश भी ग्रसित हैं। आई.एस.आई.एस. की बढ़ती [illegible], बोको-हरम, लश्कर-ए-तायबा, देशों के मध्य आपसी विवाद, महिलाओं की स्थिति, [illegible], [illegible] तेल को लेकर शक्तिशाली राष्ट्रों की सियासत, विभिन्न देशों की विस्तारवादी नीति, अन्तर्राष्ट्रीय [illegible] अधिपत्य जमाने की होड़, आदि ऐसी बातें हैं जो किसी से छिपी नहीं हैं।

[illegible] आप उनकी साथ [illegible]
[illegible] आप उन नीतियों का स्वागत नहीं कर [illegible]
[illegible] शान्ति हेतु जब हम गाँधी के सिद्धान्तों [illegible]
[illegible] दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि [illegible]
[illegible] लेकिन उसके प्रति हमारा रवैया उदारवादी है, [illegible]
[illegible] क्यों न हो, अन्तर्राष्ट्रीय जगत में हम [illegible]
[illegible]

11 सितम्बर 2001 को जब अलकायदा ने अमेरिका की वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर पर [illegible] अमेरिका ने ओसामा बिन लादेन को मौत के घाट उतारकर [illegible] यदि आप शान्ति [illegible] की नीति अपनाते हैं, तो ऐसे में न केवल [illegible] विभिन्न देशों के मध्य शक्ति के सन्तुलन के कारण [illegible] होने का सबसे बड़ा फायदा यह है कि [illegible] एक छोटा सा देश परन्तु सशक्त व सक्षम नेतृत्व [illegible] सबको पता है उसके पास हाइड्रोजन बम है। [illegible] वे अहिंसा को परम धर्म [illegible] सुरक्षा का हिस्सा [illegible] कोई अन्य राष्ट्र हम पर हमला करता है, [illegible] विचारधाराओं से प्रभावित विश्व में [illegible]

1962 के भारत-चीन युद्ध में भारत की हार का कारण भी संभवतः [illegible] 'शान्ति सर्वोपरि' आदि विचारधाराओं को परिभाषित करते [illegible] ईंट का जवाब पत्थर से देने की नीति नहीं [illegible] हम उस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि गाँधीवाद [illegible] भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी हो परन्तु [illegible] अन्तर्राष्ट्रीय जगत में इसकी प्रासंगिकता पर विचार करते हैं तो यह [illegible] नजर आती है। [illegible] और [illegible] विचारधाराओं से भरे विश्व में शान्ति हेतु गाँधीवाद पूर्णरूपेण [illegible]

[illegible]

[illegible] ।
[illegible] ॥

अर्थ :- [illegible]

तत् त्वम् असि

डॉ० [illegible]
[illegible]

[illegible] की,
[illegible] को [illegible] की,
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ?
[illegible] ?
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
तत् त्वम् असि।

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
तत् त्वम् असि।

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
तत् त्वम् असि।

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
तत् त्वम् असि।

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible] ......,
[illegible]
तत् त्वम् असि।

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
तत् त्वम् असि।

'बोझ'

कु० [illegible]
बी.ए. तृतीय वर्ष

आज भी अभिशाप
बना हुआ
उस समाज का,
जहाँ एक 'बोझ'
से कम नहीं 'कन्या जन्म'
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
आज भी
[illegible]
[illegible]
एक 'बोझ' से
कम नहीं माना जाता
उसका यह जीवन।
आज भी
[illegible]
[illegible] का अधिकार नहीं
[illegible], अपने पैरों पर चलने का हक नहीं।
[illegible]
हर दिन नए कानून
[illegible] अंकुश नहीं
[illegible]
[illegible]
और
[illegible]
एक कन्या को दे दिया जाता
[illegible] एक 'बोझ'
समझ लिया जाता।

'भ्रूण' - [illegible]

मेरे पापा

महलों के शिखर पर नहीं,
अपनी पलकों पर बिठाया आपने मुझे।
जब ठोकर खाकर गिरती थी मैं,
अपनी उँगली पकड़कर चलना सिखाया आपने मुझे।
जब छोटी सी थी मैं नादान,
अपने हाथ से खिलाया आपने मुझे।
जब डरती थी अन्धेरों से मैं,
एक नई रोशनी बनाया मुझे,
जब कभी मैं बीमार होती
आप मुझे देखते रहते,
चाहे कहीं डॉक्टरों की दवाइयों से नहीं,
आपकी देखभाल से सुकून मिला मुझे।
लोग कहते हैं क्या करोगे पढ़ लिखकर,
बेटियाँ तो फिर भी बेटियाँ हैं,
समाज की इस सोच को पीछे छोड़,
आगे बढ़ाया आपने मुझे।
दुनिया की इस भीड़ में,
[illegible]
[illegible] आपने मुझे।
हर समय यह सोच-सोचकर,
क्या मैं कुछ कर सकती हूँ?
क्या मैं भी कुछ बन सकती हूँ?
हमेशा हौसला बढ़ाकर, कुछ कर दिखाने
का विश्वास दिलाया आपने मुझे।

हर पल सिसकियाँ लेती,
इस समाज में मेरी जिंदगी,
तब मेरे आँसुओं को पोंछ,
सीने से लगाया आपने मुझे।।

जी चाहता है दे दूँ आपको,
इस दुनिया की सारी खुशियाँ,
लेकिन इस काबिल भी तो बनायेंगे आप ही मु
आज अपने पापा के सपने पूरे कर,
कुछ करके दिखाना है,
हाँ कुछ बनकर दिखाना है मुझे।

परिश्रम

कु० [illegible]
बी.ए., द्वितीय वर्ष

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] का ज्ञान नहीं मिलता।
[illegible] जीवन बिताया करते हैं,
[illegible]
[illegible] कद्र नहीं करता।
[illegible] जीवन को [illegible] नहीं मिलता
[illegible]
[illegible] नहीं मिलता,
[illegible]
[illegible] नहीं मिलता।।

हमारी संस्कृति

कु० [illegible]
बी.ए., तृतीय वर्ष

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] संस्कृति का विस्तार।
[illegible]
[illegible] संस्कृति की [illegible]
[illegible], एकता एक समान
[illegible] की पहचान
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] संस्कृति [illegible]।
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]।

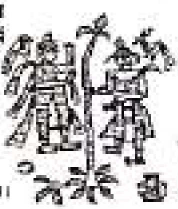

मेहनत

कु० [illegible]
बी.ए., द्वितीय वर्ष

मेहनत करने वाला कभी निराश नहीं होता,
विकट परिस्थितियों में भी परेशान नहीं होता,
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
मेहनत करने वाला जीवन में [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]।

बनना चाहती हूँ

कु० [illegible]
बी.ए., तृतीय वर्ष

न बनना चाहूँ उस सूरज की तरह,
जो शाम होते ढल जाए,
न बनना चाहती उस चाँद की तरह,
जो सुबह न देख पाये
न बनना चाहती फूल की तरह,
जो खिलते ही मुरझा जाए,
न बनना चाहती बिजली की तरह,
जो दूर से डरा जाये।
मैं तो बनना चाहती हूँ कुछ ऐसा,
जो आँखें बन्द करो तो भी नज़र आए,
[illegible]
[illegible]
[illegible]
जो अन्धेरे में भी रोशनी दे और
दूसरों के जीवन को खुशियों से भर दे।

हमारा महाविद्यालय उत्कृष्ट महाविद्यालय

डॉ० अलका आर्य
(असि० प्रो०, [illegible] विभाग)

[illegible]
एक उत्कृष्ट महाविद्यालय है।

[illegible]

श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द्र कन्या
एक उत्कृष्ट महाविद्यालय है।

[illegible]

श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द्र कन्या
एक उत्कृष्ट महाविद्यालय है।

[illegible]

श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द्र कन्या
एक उत्कृष्ट महाविद्यालय है।

[illegible]

श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द्र कन्या
एक उत्कृष्ट महाविद्यालय है।।

हिन्द-पाक बटवारे का [illegible]

[illegible]

15 अगस्त 1947 का दिन [illegible]
राजनैतिक आज़ादी के [illegible]
[illegible]
Toba Tek Singh [illegible]
[illegible]
कलम से उनके निकले
चमन-ए-आज़ादी, हम भी गाते,
सीने बहाता।।

आतंकवाद: एक वैश्विक चुनौती

[illegible]
बी.ए. [illegible]

[illegible]

[illegible] 'आतंकवाद' [illegible] 11 सितम्बर 2001 को अमेरिका [illegible] 13 दिसम्बर 2001 को संसद पर हमला, 5 जुलाई 2005 [illegible] 26 नवम्बर 2008 को ताज होटल मुंबई [illegible] 7 सितम्बर 2011 को दिल्ली [illegible] 11 मार्च 2004 [illegible] 'आतंकवाद वैश्विक चुनौती है' [illegible]

[illegible]

[illegible]

आज आतंकवाद के मुद्दे पर अंतर्राष्ट्रीय सहयोग एक दिखावा बनकर रह गया है, क्योंकि यदि यह वास्तविक होता तो अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य से आतंकवाद का सफाया लगभग हो चुका होता। यह सही है कि विश्व के सभी देश इस संबंध में एक-दूसरे का सहयोग करने का आश्वासन देते हैं, मगर हकीकत में वे कुछ नहीं करते। विश्व का सबसे शक्तिशाली देश कहा जाने वाला अमेरिका भी इस संबंध में लाचार है, जब तक अमेरिका की अफगानिस्तान में लड़ने हेतु पाकिस्तान पर निर्भरता बनी रहेगी, तब तक हम उससे वैश्विक स्तर पर आतंकवाद के प्रति कोई ठोस कदम उठाने या आतंकवाद के विरुद्ध सहयोग करने की कोई उम्मीद नहीं कर सकते। आतंकवाद एक वैश्विक चुनौती है। अतः आतंकवाद से निपटने के लिए [illegible] दुनिया को मिलकर काम करना होगा।

वैश्विक शांति हेतु गाँधी दर्शन की प्रासंगिकता

यूँ क्रांति का विचार मन में हलचल सी करने लगा
एक नौजवान की आत्मा में जैसे क्रांतिकारी हो जगा।
वह भूला न था वह अपमान अपना,
जब रेलगाड़ी से धक्का मारकर तोड़ा गया था उसका सपना।
सोचने लगा देश को आज़ादी का मंजर दिखाऊँगा,
अब और अधिक गुलाम न कहलाऊँगा।
उधर फेंके अंग्रेजी सूट-बूट
स्वदेशी, सफलता और सत्यता का पथ चलाया,
सबने त्यागा झूठ, कोई रहा न अछूत
अपने हक के लिए अहिंसा को अपनाया,
देश ही नहीं, विश्व भर में वह शांति का दीप जलाया।

2 अक्टूबर 1869 को जन्मे थे विश्व शान्ति के मसीहा मोहनदास करमचन्द गाँधी। वर्तमान युग में [illegible] संसार के लोग वैज्ञानिक प्रगति पर ही विशेष ज़ोर दे रहे हैं, भारतवर्ष का यह शांतिदूत अपने अहिंसा, सत्य, प्रेम और आत्मशक्ति के बल पर आज भी सम्पूर्ण विश्व का आदर्श है। विदेश पढ़ने जाने से पहले उन्होंने अपनी माताजी से 3 प्रतिज्ञाएँ की थीं : (i) विदेशी रहन-सहन न अपनाना (ii) मदिरापान न करना [illegible] को कभी मन में न लाना। दुर्भाग्यवश हमारे विश्वविद्यालयों से पास होने वाले [illegible] विदेशी रहन-सहन को अपना लेते हैं। गाँववाले भी शहरवालों की बराबरी करने के लिए अपनी [illegible] कर डालते हैं। परिणाम होता है कर्ज, बेरोजगारी। यदि हम गाँधी जी के विचारों को [illegible] अपनी जीवनशैली संतुलित और व्यवस्थित बनाएं। 100 वर्षों में फैली रचनाओं में से हिन्द स्वराज गाँधी जी की ऐसी कृति है जो मानव सभ्यता की राह में साधन और साध्य, सत्य और विश्वास के बीच [illegible] धर्म के असली रूप, हिंसा-युद्ध-विकास की गैर बराबरी, नैतिकता और सरकार से [illegible] प्रकृति का [illegible] जैसी वर्तमान समय की ज्वलन्त समस्याओं का एक वैकल्पिक समाधान [illegible] करती है। इससे गाँधी जी की दूरदर्शिता का पता चलता है कि उन्होंने इन समस्याओं को 100 साल पहले देख लिया था। जहाँ तक इतिहास और वर्तमान के अनुभवों का सवाल है वहाँ गाँधीवाद प्रयोग [illegible] रहा है। इसकी सबसे बड़ी मिसाल राष्ट्रीय आंदोलन है। विश्व के संदर्भ में देखें तो लंबे समय तक चले [illegible] ही कई आंदोलन मार्टिन लूथर किंग के नेतृत्व में अमेरिका में अश्वेतों का संघर्ष और दक्षिण अफ्रीका में नेल्सन मंडेला का संघर्ष- इनके प्रेरणास्रोत गाँधी ही थे। हिंसक संघर्षों की लगातार हार, [illegible] उद्देश्यों के अनुरूप फल न मिलना, एवं समाजसेवी जो भारतवर्ष का भला चाहते हैं, बार-बार गाँधीवाद की ओर लौटकर आते हैं और भविष्य में भी मानवजनित बुराईयों से निजात पाने के लिए लोगों को गाँधीवाद [illegible] होगा। हिन्द स्वराज में बापू ने कहा है कि हिंसा का आश्रय लेना तो स्पष्टतः आत्मा की दुर्बलता [illegible] है। वीर पुरुष वही है जो अपने शत्रु पर भी दया करता है। जब ज्यादातर लोग युद्ध के अलावा कोई विकल्प सोच ही नहीं पाते थे, तब गाँधी जी ने राष्ट्रीय आंदोलन को अहिंसा का मार्ग दिया। आज के समाज में [illegible] एक बड़ा सवाल है, परन्तु यह ध्यान रखने की जरूरत है कि हिंसा का विकल्प सिर्फ अहिंसा ही हो सकता। [illegible] आँख के बदले आँख की नीति सारी दुनिया को अंधा बना देगी। बापू मानते थे कि अन्याय को [illegible] से और हिंसा को अहिंसा से ही समाप्त किया जा सकता है। अहिंसा के पथ के साथ-साथ [illegible] वैश्विक शांति हेतु गाँधी जी ने स्वदेशी होने का भी पाठ विकसित किया था। और उसकी प्रासंगिकता आज 'मेक इन इंडिया' के रूप में हम सभी के सामने है जिससे देश में रोजगार बढ़ा और शांति विकसित हुई। गाँधीजी ने कहा था कि प्रत्येक व्यक्ति के लिए रोजगार की गारंटी होगी और उसे अपनी आवश्यक जरूरतों की पूर्ति के लिए पर्याप्त वेतन भी मिलेगा और उसी का प्रासंगिक रूप है मनरेगा। गाँधीजी ने भौतिकवाद और उपभोक्तावाद की अंधी दौड़ के खिलाफ लोगों को आगाह किया और व्यक्तिगत आवश्यकताओं को कम करने की भी सलाह दी। गाँधीजी ने वैकल्पिक ऊर्जा के स्रोतों एवं उनके इस्तेमाल पर ज़ोर दिया हालांकि उस समय उसे नज़रअंदाज कर दिया गया था। लेकिन ऐसा लगता है कि अब वर्तमान में लोग जाग रहे हैं तथा वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों की ओर ध्यान दे रहे हैं। गाँधी जी ने इच्छाओं पर लगाम लगाने की वकालत की थी। [illegible] पक्षी है। उसे जितना मिलता है, उतना ही और अधिक [illegible] असंतुष्ट रहता है। परन्तु व्यक्ति के पास जितनी चादर है उतने ही पैर फैलाने चाहिए। यदि हम [illegible] की नीति अपनायें तो आने वाली पीढ़ियों को भी सुविधाएँ मिल सकेंगी और विश्व पर [illegible] का आह्वान होगा। परन्तु आज इस देश के युवाओं और जनता को चाहिए कि वे शांति कायम रखने के लिए आत्मनिरीक्षण करें। औद्योगीकरण सीमित रखें, बुरा न देखें, न सुनें और न ही बोलें। [illegible] के खिलाफ भी यदि आवाज़ उठाएँ तो सभ्य रूप में, न कि मार काट और विध्वंस के ढंग में। प्रत्येक कार्यव्यवहार को गाँधीदर्शन के अनुरूप बना कर आज भी विश्व को समग्र शांति के मार्ग पर ले जाना संभव है।

❀ ❀ ❀

एक बार जब स्वामी विवेकानन्द जी विदेश गये तो उनका भगवा वस्त्र और पगड़ी देखकर लोगों ने पूछा 'आपका बाकी सामान कहाँ है?'

स्वामी जी बोले, "बस यही सामान है"

तो कुछ लोगों ने व्यंग्य किया कि, 'अरे! यह कैसी संस्कृति है आपकी? तन पर केवल एक भगवा चादर लपेट रखी है... कोट, पतलून जैसा कुछ भी पहनावा नहीं है।

इस पर स्वामी विवेकानन्द जी मुस्कराये और बोले आपकी संस्कृति का निर्माण आपके दर्जी करते हैं जबकि हमारी संस्कृति का निर्माण हमारा चरित्र करता है। संस्कृति वस्त्रों में नहीं, चरित्र के विकास में है।

- संकलित

- *संस्कार मानव के आचरण की नींव होती है जितने गहरे संस्कार होते हैं उतना ही मनुष्य अपने कर्तव्य धर्म सत्य एवं न्याय पर अडिग होता है।*
- *मनुष्य की विद्या उसका अस्त्र, धर्म उसका रथ, सत्य उसका सारथी और भक्ति रथ के घोड़े होते हैं।*

- स्वामी दयानन्द सरस्वती

आज़ादी के मायने

[illegible]

15 अगस्त 1947, एक ऐसी सुनहरी तारीख जिसके कारण हम आज आज़ाद भारत में [illegible] आज़ादी के [illegible] शहीदों ने [illegible] आज़ाद भारत [illegible] कर्तव्य है कि हम उन शहीदों को [illegible] अक्षरों में [illegible]

[illegible] एक ऐसा महान व्यक्ति जो अपने कर्तव्य [illegible] नहीं। [illegible] देश के लिए हर मायने में [illegible] देशभक्ति है। [illegible] कानून का पालन करना, भ्रष्टाचार का विरोध करना, [illegible]

आज़ादी 15 अगस्त और 26 जनवरी [illegible]। मातृभूमि इस दिन का [illegible] भूमि पर भ्रष्टाचार का नाम न हो, [illegible] माता-पिता [illegible] मातृभूमि [illegible] इस सपने को पूरा करने के लिए नींव का एक मूक पत्थर बन जायें।

कु० [illegible]
बी.एससी., [illegible]

❦ ❦ ❦

'स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है'– यह कथन कितना अच्छा, कितना प्रेरक और [illegible] स्वतंत्रता प्रत्येक प्राणी को प्रिय होती है परंतु आज़ादी को परिभाषित करना बहुत मुश्किल है, क्योंकि [illegible] विवेकानुसार स्वतंत्र रहना चाहता है और आज़ादी की सीमा तय करता है।

एक देश वासी के लिए आज़ादी का अर्थ है विकास के पथ पर आगे बढ़कर [illegible] जिससे हमारी संस्कृति की खुशबू चारों ओर फैल सके। लेकिन आज हमारी युवा पीढ़ी आज़ादी के [illegible] भूलती जा रही है, युवा लोग पाश्चात्य संस्कृति के [illegible] प्रभाव में हैं। अपनी आज़ादी का दुरुपयोग कर [illegible] आज के युग में भ्रष्टाचार की [illegible] आज़ादी है, युवाओं का एक आदर्श नागरिक की तरह न बनना, [illegible] पर चलना आज़ादी है। ज़रूरी है कि युवा पीढ़ी आज़ादी का सही अर्थ समझे, जिससे [illegible] गरीबी, बेरोज़गारी, [illegible] भ्रष्टाचार आदि न रहें। सभी नागरिक अपना हर कर्तव्य निभाएँ, [illegible] तथा एकजुट होकर अपने देश की उन्नति के लिए कार्य करें।

कु० [illegible]
बी.एससी., [illegible]

❦ ❦ ❦

[illegible]
[illegible]

[illegible] आज़ादी मिलने का दिन भारत के इतिहास में एक [illegible] दिन है। [illegible] राष्ट्रीय [illegible] 21 [illegible] किंतु क्या यही आज़ादी के मायने हैं? [illegible] आज़ादी तब मिलेगी जब देश भुखमरी, [illegible] देश में [illegible] उस दिन हम गर्व से कह पायेंगे 'हाँ हम आज़ाद हैं।'

जय हिंद जय भारत।

कु० [illegible]
बी.ए., [illegible]

❦ ❦ ❦

As said by Nelson Mandela, "Independence doesn't only mean being released from all the evils and bondages, it also means that we lead our life in such a way that all of us and our society [illegible]".

India got independence on 15 August 1947. But if we look at the present condition of our country, can we really say that we are independent? Are evils like unemployment, illiteracy, poverty etc. completely removed from our country? Even though free from all the boundages, are we [illegible] sense of freedom and equality in our environment? The answer is a big NO. This is [illegible] year of independence, but more than half of our population is affected with either illiteracy, or unemployment, diseases, hunger in some way or other.

I read in a book that if top ten businessmen of the world try, they can eradicate poverty of whole world four times. It's high time to think. We should value this freedom which our freedom fighters have gained through their hard struggles. So many of them have sacrificed their lives so that the future generations could live freely. We as young generation should always be ready to volunteer in the good deeds for our country. If all of us stand together, one day our country will surely be free from widespread poverty and deprivation.

We only need to hold our hands together and try to become an asset for our country. Let us all pledge that we will try our best to make our country free from all these evils and excel ey in the world map.

Km. Mudrika Verma
B.Sc. [illegible] Year

❦ ❦ ❦

आज़ादी के 70 वर्ष

कु० [illegible]

[illegible]

चाहना नहीं अब रण होगा

कु० प्रियंका कुमारी
बी.ए., द्वितीय वर्ष

"[illegible]"

[illegible]

[illegible]

फरियाद

सुश्री अंजलि प्रसाद, असि० प्रोफेसर, [illegible]

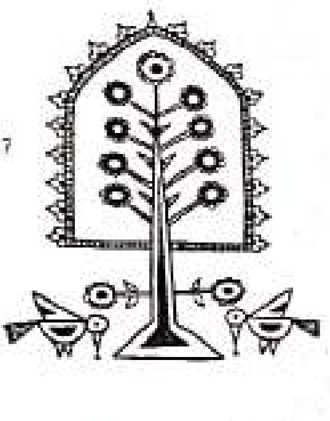

[illegible]

हम नहीं [illegible] से एक मजहब है–

[illegible]

जय हिन्द

'भारतीय संस्कृति सभ्यताश्च'

"सर्वेऽत्र सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखभाग्भवेत्॥"

[illegible] संस्कृतिः [illegible] विकासः [illegible] संस्कृतम् [illegible]। [illegible] विश्वसंस्कृतिषु भारतीय संस्कृतिः [illegible] संक्षेपतः एवं प्रकारेण [illegible]।

(क) [illegible] धार्मिकता च-
[illegible] भारतीयानां [illegible]।
[illegible] सर्वेषु [illegible] निर्दिष्टः।
[illegible] प्रधानमेव निर्दिष्टः।

(ख) विश्वस्य [illegible] च -

'सर्वभूतेषु [illegible]', 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' इत्यादीनि वाक्यानि भारतीयानां विश्वजनीनं दृष्टिकोणं [illegible] च प्रदर्शयन्ति। अनेन भारते विविधतायामपि सांस्कृतिकी एकता वर्तते। अतएव भारतीया: संस्कृतिः [illegible] संस्कृतीनां [illegible]।

(ग) त्याग संयममनोविकारनिग्रहः-

[illegible] सदा पूज्या आसन्। ब्रह्मचर्याश्रमे [illegible] तु [illegible] सर्वजनत्यागमेव विधानम् '[illegible]' इत्येव भारतीयानां मान्यता।

[illegible] प्रतिभा [illegible]। बुद्धिविवेकाभ्यां सः [illegible] प्रकृतिप्रदत्तैः [illegible] मानसिकात्मिकप्रभृतीनां शक्तीनां यो विकासो [illegible] संस्कृतिः [illegible]। [illegible] संस्कृतेः प्राणशक्तिप्रतिमा [illegible]।

दैहिक-विकासार्थं [illegible] ज्ञानार्थमपि [illegible]। स खलु [illegible] प्रभृतीनां प्रगतिः कृता सा सभ्यतायामन्तर्भवति। भारतीय संस्कृतिर्मनीषिणां [illegible] चिह्नमस्ति। इयं भारतस्य तान् सिद्धान्तान् प्रकाशयति [illegible] मन्ति। [illegible] भारते विविधाचार विचारसंस्काराणां [illegible] दृश्यते। [illegible] इत्थं भिन्नतायामपि अभिन्नता भारतीयसंस्कृतेः प्रमुख विशेषता अभिदृश्यते।

[illegible] विशिष्टतास्ति आध्यात्मिकता। मानव जीवनस्य चरमं लक्ष्यं निर्धारयति। "सर्वं खल्विदं ब्रह्म" इति भावनया [illegible] भारतीयः [illegible] ज्योतिः पश्यति। [illegible] आध्यात्मिक [illegible]। [illegible] भारतीया न कदापि [illegible]। [illegible] भारतीय [illegible] कारणम्।

असंख्याः यद्ववो मानवानां शाश्वताः उद्भवन्तः प्रभवाः सर्वं खलु।

<u>अथर्ववेद</u>

भारतीयसंस्कृतिः प्राचीनत्वदृष्ट्याऽपि महत्त्वपूर्णा खलु। इयं [illegible] प्राचीनतम संस्कृतिरित्येकमत्या [illegible] भारतीय संस्कृतिः [illegible] भारतीय धर्मदर्शनयोः [illegible] भारतीया [illegible] भारतीयसंस्कृतेरविच्छिन्ना धारा [illegible] धर्मसंस्कृत्योः [illegible] आध्यात्मिक [illegible]।

[illegible] साधनावामनेकता, उपास्यानामनियम एतद् धर्मस्य लक्षणम्।

भारतीय संस्कृतेरनुपमा विशेषता [illegible] सांस्कृतिकधारा [illegible] संस्कृतेः [illegible]। यवनाः, शकाः, कुषाणाः, हूणाः सर्वे [illegible] भारतीय संस्कृतेः समक्षं [illegible] भारतीयानां [illegible] भारतीय संस्कृतिरन्यासां संस्कृतीनां प्रभावमप्यगृह्णात्। भारतीया न संकुचित मानसा आसन्। [illegible] श्रेष्ठ भावना। [illegible] न कदापि संकोचं [illegible]। [illegible] संस्कृतीनां श्रेष्ठ भावनानामपूर्व-सम्मिश्रणं जातम्। भारतीय [illegible] भारतीयसंस्कृतिरासीत् [illegible]। [illegible] धर्मः [illegible] पुनश्च भावना [illegible] अक्षरशः कण्ठे कृता। [illegible] संस्कृतिरस्मत्सुग्राम। गुरुजनानामतिथ्यादीनां च [illegible], कृतज्ञता, वीरपूजादीनि च अन्यानि तत्वानि सन्ति भारतीयसंस्कृतेः।

[illegible] भारतीय संस्कृतेः प्राणशक्तिप्रतिमा जाता यया [illegible] सम्पूर्णदेशं एकतया [illegible], विश्वसंस्कृतीनां च सम्मुखं गौरवोन्नता तिष्ठति।

[illegible] विशेषताभिर्भारतीया संस्कृतिरद्यापि अप्रतिमया प्राणशक्त्या पूरिता जगतां संस्कृतीनां मध्ये [illegible] स्थानं भजते।

यत्रैषु यद्भारतमार्यमाधुर्याः स्तुवन्ति गार्हस्थ्यमितान्यमेषु।

– श्रीहर्ष, नैषधीयचरितम्।

उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्

[illegible]

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्। उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।

Role of Women in Art and Culture

Km. Shruti Mishra
Km. Manisha
B.A. IIIrd Year

Women have been and continue to be integral to the institution of art but despite being engaged with the art world in every way many women artists have found opposition in the traditional narrative of art history. They have faced challenges due to gender biases from finding difficulty in training to selling their work and gaining recognition. So how have women come forward as such strong presence in art history today and how do we go about telling the stories by those who were forgotten by history.

The modern women are inclined towards the social issues and trying hard to improve the social status of women at large. They are actively participating in social, economic and political activities. Increased awareness and education has inspired women to come out of the four walls of the home. Many women actively supported and participated in the nationalist movement, secured political positions and offices in administration and public life in free India.

Women have always been artists and there always have been glimpses of women's art within male driven societies. Even when it comes to the earliest works of art known like the voluptuous Venus from 25000 B.C. and other small stone carriage, no one is certain if these works of art were created by women or men. But with the beginning of the 20th century, things began to change not only for women artists but for women across the domestic and public spheres. These social shifts, which began to emerge at the beginning of the century, developed further with the advent of world war I and escalating global unrest, propelled, more women into the work force exposing them to social, professional and political situations that had previously been limited to men.

"Art is the various branches of activity and creativity such as a painting, music, literature and dance etc." The women of the present generation have generally received higher education than the women of their preceeding generation. There have been for reaching consequences in the economic status of their families. Literature is also an art. The emergence of the genre of feminist versions of fairy tales that began in the 1970, gave particular attention to the impact of the women's movement on the development of the genre.

"Culture is the ideas, customs, and social behaviour of a particular people or society."

Women had an honourable place in the society. They were not secluded from men and freely participated in public life. At one place, women were regarded as goddess, held in high esteem, where as at other place in the same scripture in some other context, they were regarded, no better than just slaves or chanels.

Disregarding what was practised at any particular time, the ancient Indian scriptures and documents (Mahabharata, Ramayana, Vedic hymns, and various codes of the law of Manu) gave women a very high and protected place in their basic moral codes.

Many women in many cultures lived many different lives that are connected by the thread of art and culture. This fact also enhanced considerably role of women in the field of art and culture.

Relation of Science with Art and Culture

Km. [illegible]
B.Sc. [illegible]

Vishnu Puran says "[illegible]" knowledge is which liberates and "[illegible]" knowledge gives humility. If we have enough knowledge about our environment, [illegible] advancement, we are able to embrace our imagination on a piece of art. Art and culture have [illegible] a wide relation with science since 400 B.C. Aryabhatta, many years before the discovery [illegible] gave the theory that earth is round and rotates on its axis. He also developed and [illegible] without which technology of computer won't work. Acharya Sushrut in his treatise "[illegible] Samita" gave 125 treatments of diseases and six ways of plastic surgery. He was known as [illegible] plastic surgery. He gave new ways to use art to develop surgical instruments. He used [illegible] for making stitches in plastic surgery. Bhaskaracharya in his book "Surya Sidhant" gave [illegible] of gravity 500 years before the theory of sir Isaac Newton. The above example shows that [illegible] has been motivated to give some of the initiatives and path guiding laws of science. [illegible] gadgets, instruments and tools we have today are all designed from pre-imaginational [illegible] innovative ideas which came through art. Art is a discovery and development of elementary [illegible] of nature into beautiful forms and suitable for human use.

If we talk of culture, it contributes equally in science and its ideas. Nowadays, due to [illegible] in population, food demands are also becoming high. To overcome this issue, vertical farming [illegible] is a good alternative. Old culture involved cooking of food in clay pots on the chulha. [illegible] of aluminium/ steel utensils and L.P.G stove was a boon to humanity and a result of [illegible] combination of culture with science. Technology came over and pots changed to pressure [illegible] With their shapes just like the earthen pots & handis, used traditionally. Through art, [illegible] of solar panels and through science it was initiated. Basically, art give imagination, innovation [illegible] and science turns them into reality. Science is a way of discovering what is in the universe [illegible] those things work today, how they worked in the past and how they are likely to work in the future. What a beautiful connection is it? This is how things get invented. Every invention is an outcome [illegible] "Thought of a moment" which just arises in a person's mind. Then temporary models [illegible] thermocol or wood are designed through art using various techniques from cultural world, [illegible] finally through technology of science they are moulded into real. We should always keep in [illegible] though science is grading high in technologies day by day, but usage of modern appliances leads [illegible] huge loss.

Art and culture have widely contributed in advancement of science, which must be [illegible] even involved in our daily lives and activities. This would lead to our enhancement and knowledge. Some examples are: using biodegradable materials, recycled products, eco-friendly materials [illegible] Hence, art and culture in a big way are deeply related to each other and contribute in a big way [illegible] economic progress and well being of human race.

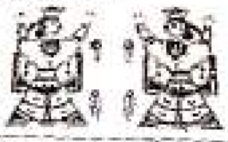

Transparency in National Policy Can Eradicate Corruption

Km. Ardya Gauri
B.Sc. II year

I learned not to trust people.
I learned not to believe, what they say.
But to watch, what they do I learned.

[illegible] one of the most aggravating not only in India but in the whole world. Corruption is [illegible] occurs at all levels of society from local government to national government. [illegible] fighting corruption but transparency in government operation can minimize [illegible] a state of transparency. What is the impact of transparency in government? How [illegible]?

Before discussing these questions it is necessary to understand what is the meaning of good [illegible] Governance. In simple analogy is just like a fisherman who steers his boat towards his [illegible] and the rudder i.e. the tool which drives the boat. Similarly in Governance [illegible] If the destination is random and unplanned which creates anarchy and [illegible] then it is bad governance.

Transparency in governance refers to the availability of information to the general public and [illegible] rules regulation and decisions etc. Basically, transparent governance means [illegible] from citizen. Where as availability of accurate and timely information is an [illegible] for good decision making. Transparency is a must to keep administration free of [illegible] "The corruption sets in when rules are not clear" Putting information and making [illegible] deals on line can help tremendously in making governance corruption free.

[illegible]

A Journey Note

It was just a fine day when I first entered the college. Adopting our school uniform means adopting the atmosphere and positive changes but I never knew that it'll transform my individuality in this way. A journey of three years in this college was a period that made me learn day by day. I entered our college with a resolution and when I won the very first debate, it shaped my goal and it was possible only because every single person helped me and discovered in me some beautiful traits and consequently scoring higher in the batch, winning many competitions, titles etc. that have been a part of my journey, but something I never can forget. I still remember [illegible] when I made one of our teachers weep through my speech and the way she expressed her love towards me is something I can never forget. I always got all the cooperation from our [illegible] and other college staff and of course all that love I got from my teachers always made me feel special. I personally think that if you win something, any trophy, tag, competition or whatever it is, I [illegible] an achievement but when you win some one's heart that's happiness. I have learnt how to stay humble, polite, and clean. I have seen how to be dedicated, how to be disciplined, [illegible], hard working but on top "how to be a better individual." And this is what and what to be.

Human Values and education

Dr. [illegible]
Asstt. Prof. [illegible]

Human values mark the destiny of individual as well as its nation. The three main [illegible] human values are self esteem, respect for others and individual and collective efforts for the [illegible] of society and nation. Values means the principles or standards, which help us to live [illegible] of life. Values are the worthy ideal that one follows to distinguish the right from the wrong [illegible] ideals or values are considered worthy in building up the character and personality of an individual because one's actions and beliefs are based on these ideals. They are the guiding principles [illegible] shape our world, outlook, attitudes and conduct. Moral values refers to the good values [illegible] honesty, integrity truthfulness, compassion, helpfulness, love, respectfulness, hard work [illegible].

But today in our society we are facing the problem of erosion of values. We are [illegible] unfortunately man has become very self centered. Selfishness seems to have entered in [illegible] words and deeds. There is an all round race for the reward of money and power and it has become source of the greatest human exploitation. In contemporary world we are facing the problems of poverty, terrorism, proxy war, corruption, climate change and so on, only due to deterioration of [illegible] system. India, too which is known for its spirituality and morality is not lagging behind any [illegible] this regard. Our conventions and values are undergoing a fast change. We have forgotten the [illegible] philosophy of 'Sarvjan Hitay, Sarvjan Sukhay".

This is indeed the need of the hour to awaken the society and to bring about a desired change in the mindset of the people, so that we are able to imbibe the right value driven approach in the coming generations. Specially such awareness in the students, because they are the future of the world [illegible] help us to make the society free of various evils. Through moral education we can inculcate and promote universal values like understanding tolerance, friendship etc, which oriented towards [illegible] unity and integration.

Will Durant, a great American writer and philosopher, once said, "Education is the transmission of civilisation." So through education we can transmit a set of moral ethics, by which people [illegible] gradually brought to their own realization of what is good behavior for themselves and for the society.

Youth is the face of tomorrow, and the torch bearers of the country so they must be developed thoughtfully. Socio-religious reformer of the 19th century in India Swami Vivekanand said, "Education is not the amount of information that is put into your brain and runs riot there, undigested all your life. We must have life building, man making and character making assimilation of ideas".

[illegible]

Culture in the harmonious development of the faculty in man

- Francis Bacon

Culture is the sum of all the forms of art, of love and of thought, which in the course of centuries have enabled man to be less enslaved

- Andre Malraux

Folk Dance of India : Looking at life as a whole

Dr. Anupma Garg
Asstt. Prof. English

[illegible] vast variety of races and conditions, had been a veritable treasure house of dance [illegible] centuries. Most of the prevailing systems of Indian classical dancing, which are [illegible] techniques and show a high degree of refinement, have had their origins in the [illegible] common people, which still survive in tribal hamlets and peasants. The Indian folk [illegible] behind its simplicity lie both a profundity of conception and a directness of [illegible] an unique glimpse and taste into its way of life, inside [illegible] of great artistic value. Although they tell the same story, what's truly [illegible] each state and region. [illegible] they still are from each other.

[illegible] attempt at artistry in folk dance. The very existence of dance is adequate [illegible] to be the pleasure of the dancers. No audience in the usual sense of the [illegible] those who gather round to watch are as much a part of the collective self [illegible] the dancers themselves. More over, the concept of portraying motion is, generally [illegible] folk dance is as much as what is expressed is natural and original.

What is important is not the grace of the individual dancer or the virtuosity of the isolated pose, [illegible] of the overwhelming buoyancy of spirit and the eloquent, effort less ease with [illegible] expressed.

The folk dances of India are so closely woven into the lives of the people that they invariably [illegible] inspiration from the movements associated with the performance of daily tasks. In [illegible] these dances the operations connected with sowing, harvesting and hunting seem to have [illegible] rhythmic pattern and thus made beautiful. Peasant children often learn these dances [illegible] they go to work in the fields, so that when they are old enough to bring their share of [illegible] each movement they perform is familiar and joyful. The young tribal lad is [illegible] when he encounters a wild animal from his early childhood he has practised the hunter's dance, which is not merely a symbolic ritual, but is composed of movements actually needed to [illegible] dangerous beasts of the jungle.

The folk dances of India are rooted not only in the daily lives of the dancers, but also in the physical environment which, by the large, guides their development and provides, so to speak, a [illegible] stage for their performance. Nature, silently, unobtrusively fashion these dances as she does the lives of the people who dance them.

As the dances from the mountain regions sway and bend, they recreate the vast, undulating ranges of the Himalayas. The agitated movement and abrupt changes of posture in the otherwise gentle rhythms of Manipuri dancing signify violent storms and uprooting of trees. The tense and watchful attitudes in the dancing of Naga and Gondas denote the known and unknown perils of the jungle. The dances of the fishermen of Saurashtra suggest the roaring, mounting waves of the sea, while the folk dances of the plains, in contrast, impart a sense of peace and harmony which are indicative of the milder aspects of nature.

The character of the folk dancing varies with the climate and topography of each region, but the religious nature of its origin is shared by all dances in India. Even the so called folk dances, which are usually associated with the passages of the seasons, or perform to celebrate the sowing or

[illegible] partake of the character of the ritual in some degree [illegible] The religious folk dances [illegible] deity [illegible] human being [illegible] people [illegible] deities [illegible] Krishna's flute [illegible] with Krishna throughout the night.

The [illegible] of [illegible] is the inspiration of [illegible] dances of the country [illegible] that, when adapted to local conditions [illegible] dances [illegible] widely practised only among [illegible] deity.

Thus, there is a good deal of overlapping even in the three accepted broad categories of dances, and the inadequacy of classifying them into social, religious and martial dances is a measure of the [illegible] India's tradition of looking at life as a whole.

[illegible]

Influence of cultural Ethos on Development

Km. Ananya [illegible]
B.A. [illegible]

What is culture ? For different societies, religions, castes and countries their culture may vary but the basic values are the same world wide. Mahatma Gandhi popularly known as the father of the nation advocated "Simple living High Thinking". If a country or people worldwide follow his thinking, this single line can change the life of millions in many ways. Criminal waste of food and unnecessary hoarding of commodities can be avoided and there will sufficient to meet the basic requirements of poor and deprived.

Basic values imbibed and promoted by the culture of any society plays an important role in its progress. For instance, Indian culture upholds the sutras like सर्वे भवन्तु सुखिनः, [illegible] which are quite in harmony with principle of modern development. Economic doctrines like maximum good of maximum number and sustainable development resources, living in harmony with nature and promote the cause of environmental conservation etc.

If we follow many such cultural ethos and include them in our day to day lives and in economic policy formulation many of world's evils such as poverty, global warming, terrorism, etc. will automatically be taken care of. Values like honesty, hard work, mutual co-operation etc. all these values will definitely lay a strong foundation which will help in the betterment and up-liftment of the society. To conclude, if all these steps are taken by the ruling government and the people only then we can strive for the development of any economy and can achieve by it.

महाविद्यालय में मेरा यादगार पल

मेरी पहली कविता

[illegible]

[illegible]

जब मेरा आत्मविश्वास जागा

[illegible]

[illegible] Turning Point [illegible]

मेरा पहला मैडल

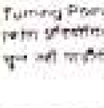

[illegible] 100, 200, 400 [illegible]

[illegible]

[illegible]

जब मेरी पहली पेंटिंग बिकी

[illegible]

आत्मनिर्भरता की ओर

[illegible]

'एक भारत - श्रेष्ठ भारत' विशेषांक (2017-18)

अपराजिता : 'एक भारत - श्रेष्ठ भारत' विशेषांक [illegible] अपराजिता सत्र 2017-18 हेतु [illegible] निर्देश निम्नवत् हैं-

1. [illegible] प्रत्येक रचना के अंत में मौलिकता संबंधी प्रमाण-पत्र [illegible] मैं .... कक्षा .... की छात्रा [illegible] .... शीर्षक की रचना मेरी [illegible] प्रमाणित करती हूँ कि .... [illegible] परिणाम के लिए मैं स्वयं उत्तरदायी रहूँगी।

छात्रा के हस्ताक्षर

[illegible] हस्तलिखित या टंकित होनी चाहिए।

2. [illegible] की जा सकती है-
[illegible] - Times New Roman, Font Size - 11
हिन्दी - A.A Text, Font Size - 14
E-mail ID - [illegible]@gmail.com

3. रचनाएँ हिन्दी, अंग्रेजी व संस्कृत किसी भी भाषा में लिखी जा सकती हैं।

4. प्रत्येक रचना के साथ अपना पासपोर्ट साइज फोटोग्राफ भी संलग्न करें।

5. प्रकाशन योग्य रचनाओं के चयन में सम्पादक मंडल का निर्णय अंतिम होगा।

6. [illegible] अधिकतम 20-09-2017 तक पत्रिका के संपादक मंडल के सदस्यों में से किसी [illegible] जमा कराई जा सकती हैं।

सम्पादक

जिसका ह्रास न हो वही सनातन धर्म: विष्णुदत्त
स्वर्ण जयंती के मौके पर एस.डी. कॉलेज ने किया प्रदर्शनी का आयोजन
छात्राओं को आत्मनिर्भर बनाने के गुर
प्रतियोगिता में अनिका ने बाजी मारी
प्रतियोगिता में होनहारों ने मारी

बेटियों के सर्वांगीण विकास की पहल
रंगोली में एसडी कॉलेज की छात्रा

महाविद्यालय परिवार

डा० अर्चना मिश्रा – प्राचार्या

शिक्षिका वर्ग

कला संकाय

1. डा० अर्चना मिश्रा, एसोसिएट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र
2. डा० अनुपमा गर्ग, एसोसिएट प्रोफेसर, अंग्रेजी
3. डा० अलका आर्य, एसोसिएट प्रोफेसर, चित्रकला
4. डा० भारती शर्मा, असिस्टेंट प्रोफेसर, अंग्रेजी
5. डा० कामना जैन, असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान
6. डा० किरन बाला, असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र
7. डा० अर्चना चौहान, असिस्टेंट प्रोफेसर, चित्रकला
8. कु0 अंजलि प्रसाद, असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र
9. डा० सीमा रॉय, प्रवक्ता हिन्दी (प्रबन्ध तंत्र)
10. सुश्री महनाज फातिमा, प्रवक्ता अंग्रेजी (प्रबन्ध तंत्र)
11. सुश्री करुणा गुप्ता, प्रवक्ता संस्कृत (प्रबन्ध तंत्र)
12. श्रीमती भवेता अग्रवाल, प्रवक्ता अर्थशास्त्र (प्रबन्ध तंत्र)
13. डा0 अन्जु शर्मा, प्रवक्ता हिन्दी (प्रबन्ध तंत्र)

विज्ञान संकाय (स्ववित्त पोषित)

1. डा0 असमा सिद्दीकी, प्रवक्ता, वनस्पति विज्ञान
2. डा0 उमा रानी, प्रवक्ता, वनस्पति विज्ञान
3. श्रीमती पल्लवी सिंह, प्रवक्ता, रसायन विज्ञान
4. कु0 हिमानी त्यागी, प्रवक्ता, रसायन विज्ञान
5. डा0 रेखा सिंह, प्रवक्ता, जन्तु विज्ञान
6. डा0 संगीता सिंह, प्रवक्ता, जन्तु विज्ञान
7. श्रीमती शैली सिंघल, प्रवक्ता, कम्प्यूटर साइंस
8. श्रीमती दीप्ति नागपाल, प्रवक्ता, कम्प्यूटर साइंस
9. डा0 पारुल चड्डा, प्रवक्ता, गणित
10. कु0 नमिता जायसवाल प्रवक्ता, गणित
11. डा0 ज्योतिका, प्रवक्ता, भौतिक विज्ञान
12. श्रीमती प्रीति वर्मा, प्रवक्ता, भौतिक विज्ञान
13. डा0 मेघा जैन, प्रवक्ता, माइक्रोबायोलाजी
14. कु0 शैली शाक्य, प्रवक्ता, माइक्रोबायोलाजी

एम० ए० (स्ववित्त पोषित)

1. कु0 दीपिका, प्रवक्ता चित्रकला
2. श्रीमती मीनाक्षी कश्यप, प्रवक्ता चित्रकला
3. कु0 अर्चना प्रवक्ता चित्रकला
4. डा० शालिनी वर्मा, प्रवक्ता राजनीति विज्ञान
5. डा० रुचि गहलौत, प्रवक्ता राजनीति विज्ञान
6. कु0 परवीन, प्रवक्ता राजनीति विज्ञान
7. डा० स्वणलता मिश्रा, अतिथि प्रवक्ता, चित्रकला

शिक्षणेत्तर कर्मचारी वर्ग

कला संकाय

श्री अनुज कुमार सिंघल, नैत्यिक लिपिक
श्री नवाब सिंह, माली
श्री राजपाल सिंह, बुक लिफ्टर
श्री रामराज शर्मा, पुस्तकालय परिचर
श्री रविन्द्र कुमार, कला परिचर
श्री पंकज कुमार, परिचर
श्री सतीश कुमार, सफाईकार
श्री तीरथपाल, परिचर
श्री कर्णपाल सिंह, परिचर

विज्ञान संकाय एवं एम०ए० (स्ववित्त पोषित)

श्री राकेश कुमार शर्मा, कार्यालय अधीक्षक
श्रीमति प्रीति शर्मा, पुस्तकालय प्रभारी
श्री निशान्त पंडित, लिपिक
सुश्री सुषमा देवी, पुस्तकालय लिपिक
श्री अजय अविनाश, कम्प्यूटर ऑपरेटर
श्री विनोद कुमार, प्रयोगशाला सहायक
श्री शिवमंगल वर्मा, प्रयोगशाला सहायक
श्री संदीप भटनागर, प्रयोगशाला सहायक
श्रीमती नीतू तायल, प्रयोगशाला सहायक
कु0 प्रियका, प्रयोगशाला सहायक
श्रीमति सुषमा कटारिया, प्रयोगशाला सहायक
श्री गगन रस्तोगी, परिचर
श्री उमेश कुमार, परिचर
श्री राजेश कुमार, परिचर
श्रीमती नीलम, सफाई कर्मचारी
श्री तेलूराम, परिचर
श्री मुकेश, परिचर
श्री सत्यप्रकाश गौड़, परिचर
श्रीमती शर्मा देवी, सफाई कर्मचारी

मोर बोले रे बलम जी
आपणे बाड़ा में मोर बोले रे
मोर बोले रे
आपणे बाड़ा में ओ भैंल जी

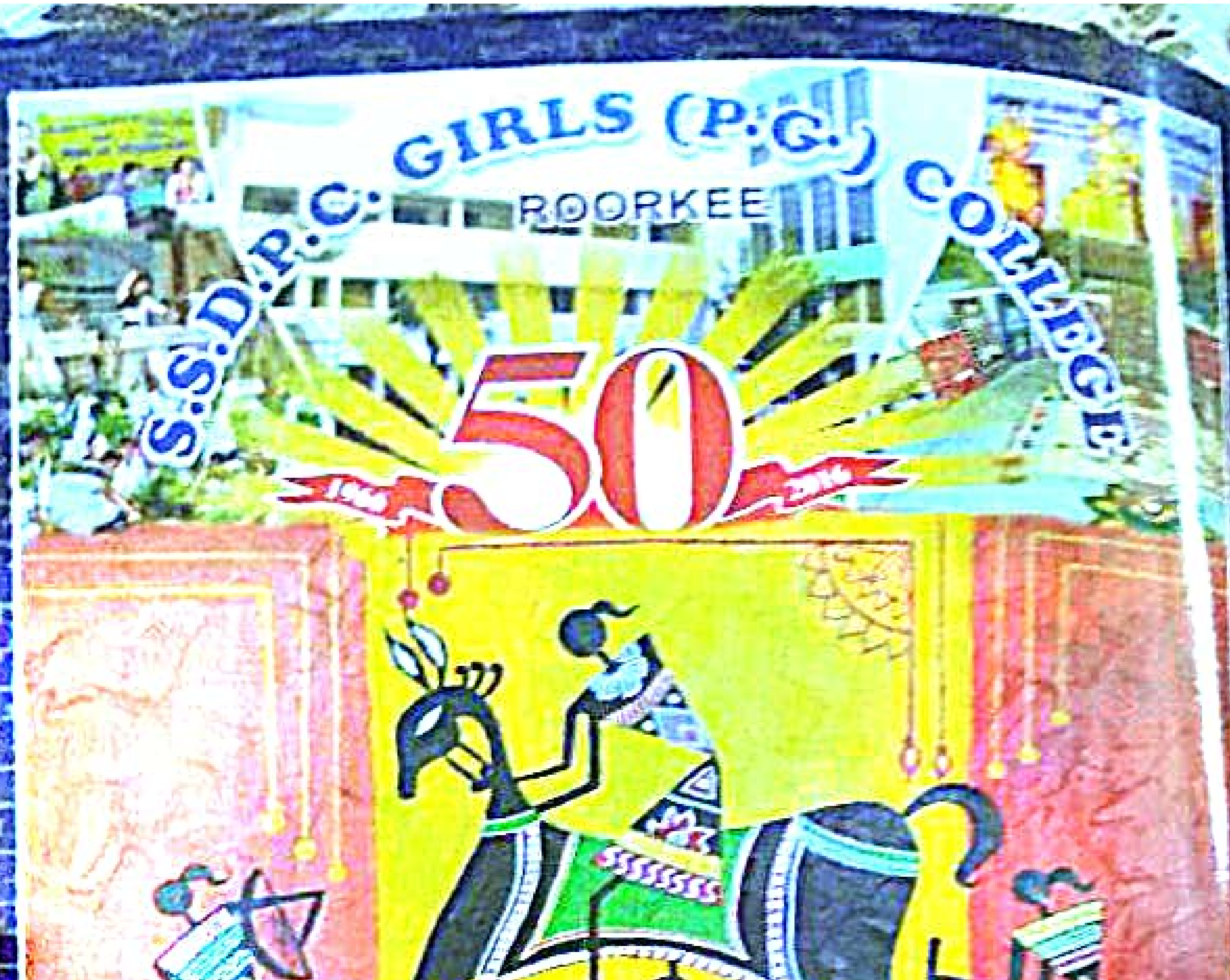
S.S.D.P.C. GIRLS (P.G.) COLLEGE
ROORKEE
50